**सच्चाई**



**आशफाक खोपेकर**





प्रकाशक:

BFC Publications Private Limited

CP -61, Viraj Khand, Gomti Nagar,

Lucknow – 226010

ISBN:

कॉपीराइट (©) - (**आशफाक खोपेकर**) (2023)

सभी अधिकार सुरक्षित ।

प्रकाशक की अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी भाग की न तो प्रतिलिपि बनाई जा सकती है, न पुनरूत्पादन किया जा सकता है और न ही फोटोकॉपी और रिकॉर्डिंग सहित किसी भी माध्यम से अथवा किसी भी माध्यम में, किसी भी रूप में प्रेषित या पुनःप्राप्ति के उद्देश्य से संरक्षित किया जा सकता है । कोई भी व्यक्ति जो इस कार्य के प्रकाशन के संबंध में कोई भी अनधिकृत कार्य करता है, क्षति के लिए कानूनी कार्यवाही और नागरिक दावों के लिए उत्तरदायी हो सकता है ।

इस पुस्तक में व्यक्त किए गए विचार और प्रदान की गई सामग्री पूरी तरह से लेखक की है और प्रकाशक द्वारा सद्भाव में प्रस्तुत की गई है । सभी नाम, स्थान, घटनाएं और घटनाक्रम या तो लेखक की कल्पना की उपज हैं या काल्पनिक रूप से उपयोग की गई है । कोई भी समानता विशुद्ध रूप से संयोग है । लेखक और प्रकाशक इस पुस्तक की सामग्री के आधार पर पाठक द्वारा की गई किसी भी कार्रवाई के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे । इस कार्य का उद्देश्य किसी भी धर्म, वर्ग, संप्रदाय, क्षेत्र, राष्ट्रीयता या लिंग की भावना को ठेस पहुंचाना नहीं है ।

**अनुक्रमणिका**

**शीर्षक पृष्ठ-संख्या**

[\*आज का दौर\* 5](#_Toc134194623)

[\*कुदरत\* 23](#_Toc134194624)

[\*करोना\* 26](#_Toc134194625)

\*[पिता\* 35](#_Toc134194626)

[\*आज के हालात\* 49](#_Toc134194627)

[\*गणपती बाप्पा मोरया\* 54](#_Toc134194628)

[\*सफ़र जिंदगी का\* 58](#_Toc134194629)

[\*आज का माहोल\*. 78](#_Toc134194630)

# \*आज का दौर\*

इस दौर से ऐसे गुजरना होंगा कभी सोचा न था।

अपनो से अचानक बिछडना होंगा कभी सोचा न था।

इंसानियत को कुचलकर नफाखोरी होगी कभी सोचा न था।

मसीहा से बढकर जल्लाद होगे कभी सोचा न था।

एक तरफ मातम होंगा एक   
तरफ खुर्सी लडाई होंगी कभी सोचा न था।

जो आज होरहा है यहा दूनिया मे कही होगा सोचा न था।

वबा है या साज़िश किसीकी परवरदीगार तु ही जाने।

खता किसकी है तु ही जाने बरबाद ऐसे हो रहा मुल्क कभी सोचा न था।

तेरा ही सहारा है मालिक हो करामत ऐसी कभी किसी ने सोचा न था।

**\*\*\*\*\***

हालात बदलने देर नही लगती खुदको बदलने की देरी है।

तकदीर बदलने देर नही लगती इरादे बदलने की देरी है।

दुनिया बदलने देर नही लगती नजरया बदलने की देरी है।

हालात ये सदयो पुराने सही पर कहानी तेरी और मेरी है।

**\*\*\*\*\***

कुत्ते की दुम बारा साल नली मे रखो नली तेढी होजाएगी पर दुम सीधी नही होती।

मुहावरा ये जिनके लिए बना है वह खुद समझते समझाने की जरुरत नही होती।

खुदको काबील समझकर बेवकुफी करते है वो उन्हे समझने समझाने की जरुरत नही होती।

वक्त जाया न करो उन्हे सुधारने के लिए समझदारी अक्लमंदी उनकी गिज़ा नही होती।

**\*\*\*\*\***

मज़हब और समाज के ठेकेदारो को जरुरत है खुद के अन्दर झांके अमर नही है कोई ।

गरीब तो मर ही रहा खुद्दारो के भी चल रहे है फाके पुछनेवाला नही है कोई।

वबा के साथ चल रही है साजिशे खुर्सी संभाले है सब वाली हमारा नही है कोई।

खुदको ही संभालना होगा लेनेवाले ही है सब मालिक के सिवा देनेवाला नही है कोई।

**\*\*\*\*\***

इन्सानियत की सोच रखनेवाले मज़हब के नामपर नफरत नही फैलाते।

यह वो कमीने है जो हैवानियत पर अमलकर खुदको मसीहा खैलाते।

समझदारी हर एक को दी है परवरदीगार ने फिरभी हम इन्हे क्युॅ नही झुटलाते।

जागना पडेगा हमे क्युॅ न हम एकहोकर इन्सानियत का मिसाल कायम करवाते।

**\*\*\*\*\***

समझो अपनो और दोस्तो को वक्त खराब चल रहा है।

हकीकत कुछ और सियासत कुछ और चल रहा है।

अक्लमंदी से लो काम समझो क्या अच्छा क्या बुरा हो रहा है।

जागो दोस्तो तरक्की के नाम पर कही देश बर्बाद न हो रहा है।।

**\*\*\*\*\***

रोज नई जिन्दगी शूरू होती है सबेरे सबेरे याद रखना।

नींद आधी मौत है, मौत मुक्कमल नींद है याद रखना।

खत्म करो सब झगडे साथ कुछ नही जाना है याद रखना।

रोते हुए आना और अपनो को रुलाकर जाना है याद रखना

**\*\*\*\*\***

खुलापडा है रबका खजाना इल्म,  
शौहरत, दौलत का तेरे मांगने का इंतजार है।

दुनियावालो से क्यु मांगता फिरता है तु देनेवाले को भूलकर बेज़ार है।

वक्त अच्छा बुरा चला जाता है   
जल्दबाजी मे गलत कदम उठाना बेकार है।

तन्दुरस्ती जो दी है रब ने तुझे बेमोल है उसे तेरे सर झुकाने का इंतजार है।

**\*\*\*\*\***

सफर ज़िन्दगी का कितना है ना तुझे खबर न मुझे खबर।

प्यार से जीने की कोशिश कर   
आखिरी वक्त मे हिसाब हो बराबर।

न कुछ तेरा है न कुछ मेरा खुश होता है   
तु देखकर दौलत को एक नजर।

मस्त है दुनिया की मस्ती मे तु आखिरत के अंजाम से बेखबर।

**\*\*\*\*\***

ना वक्त का कोई भरोसा है ना नसीब का कोई ठिकाना।

जीते है सब इसी के भरोसे जिसे न किसीने देखा न किसीने जाना।

उम्मीद है हर किसी को सौ बरस जीने की पर भुल गये है हक्क हलाल जीना।

सुकुन से जीने क लिए याद रखना हाराम से निकलकर हलाल ज़िन्दगी जीना।

**\*\*\*\*\***

हरतरफ हो दुआओ मे याद तुम्हरी काम कुछ ऐसे करो।

धनदौलत आती-जाती रहेगी वक्त को बर्बाद न करो।

वक्त के साथ जो चलाजाए इन्तजार उसका न करो।

तन्दुरस्ती हजार नियामतो से बढकर है उसे संभाला करो।

**\*\*\*\*\***

दिखता तो ये नया जमाना है पर बोहत कुछ यहाॅ अब भी पुराना है।

जीना आसान है समझदारो के लिए बेवकुफो का न था कभी ना ये जमाना है।

ज्यादा चलाकी मक्कारी टिकती नही यहाॅ से सबको खा खुजाके निकल जाना है।

समझदारी से लो काम वरना पच्छताना है बुरा वक्त टला नही आगे और भी आना है।

**\*\*\*\*\***

कबतक और कितना छुपावोंगे राजेदिल चेहरा सबकुछ दिखा देता।

मतल्बपरस्त न बनो अच्छा बुरा सब वक्त दुनिया को दिखा देता।

क्या लाया था क्या लेजाएगा अपनी हरकतो से तु सबकुछ दिखा देता।

शान से जीएगा यादकर रब्बको कब क्या करेगा वह किसीको नही बता देता।

**\*\*\*\*\***

करोना के बहाने लुट मचा रख्खी है नफाखोरो ने मोदीजी कहा देख रहे हो तुम।

वैक्सीन के नामपर हवा और पानी भरके इन्जेक्शन दिए जारहे है मोदीजी कहा देख रहे हो तुम।

मसीहा समझा था आपको सब ने जान से खेल रहे है कुछ कम्बखत आज मोदीजी कहा देख रहे हो तुम।

समझे थे हम कुछ इन्साफ होंगा मरगये जो उन्की छोडो जिन्दा है उनकी सोचो मोदीजी तुम।

**\*\*\*\*\***

इतिहास गवाह है मोहब्बत मे ताजमहाल बन गया, नफ़रत ने तबाही मचाई है दुनियामे कई बार।

मोहब्बत और नफरत का आन्जाम बताया है पीर फकीर पैगंबरो ने दुनियावालो को कई बार।

असर नजाने कब होगा इन बातो का हमपर दोहराते है हम वही गलतीयां जीवन मे कई बार।

अब न संभले तो कभी नही संभलेगे बडा सुकुन है मोहब्बत से जीने मे,कोशिश करके देखो एक बार।

**\*\*\*\*\***

अब तो संभल जावो प्यरो मुसीबत को टल जाने दो।

अदनासा इलाज इसका सयम सावधानी खुदमे आने दो।

लुटेरो को सबक सिखाने का मौका हात से न जाने दो।

समझदारी से खत्म होगा करोना उसे खत्म हो जाने दो।

**\*\*\*\*\***

वक्त का तकाजा है कोई आता है कोई आकर चला जाता है।

ये विधी का विधान है इसे कोई   
नही रोक पाया है न रोक पाता है।

कर्मों की बदौलत कोई दिल में   
रह जाता है कोई भुला दिया जाता है।

स्वर्ग नरक का हिसाब ऊपरवाला जाने   
अब तो दुनिया में हिसाब हो जाता है।

जमाना क्या कहेगा इस डर से   
न जी तु खुद अपनी पहचान बना।

औकात गर न है तेरी सुकुन से   
जीने की घमण्ड न कर पहचान बना।

नाकारा खुद गर है जमाना खराब है   
कह कर बहाने तु न बना।

देता है हर मख्लुक को   
वो खुदको तु मागने के काबिल बना।

**\*\*\*\*\***

जमाने का दस्तुर निराला है हर किसी की एक कहानी है या अफ़साना है।

कोई तुफानी रफ्तार से कोई आराम से गुजरता है मतलब मंजिल तक जाना है।

सतयुग चलागया सत्य को लेकर कलयुग है ये माना झुटो का जमाना है।

मुश्किल नही है अब भी मंज़िल तक पोहचना मेहनतकश का जमाना है।

**\*\*\*\*\***

खुला आसमान मुफ्त की हवा,पानी, रोशनी सब के लिए है कुदरत की देन।

नाशुक्रे बनकर लालच मे दुखी हो घुमरहे है हम खोकर अपना सुख चैन।

दुख ही मिलता है जीवन मे नाशुक्रो को ज़िन्दगी भर रहेते है बेचैन।

खुद के साथ आदत को बलना होगा लुत्फ मिलेगा जीवन मे करीब होगे सुख चैन।

हर इंसान की अपनी एक सोच होती है कोई अच्छी बातोको समझाता है कोई बुराई को अच्छा समझकर जीता है।

सोच बदलने से दुनिया नही बदलती दुनिया को देखने जिने का तरीका बदलता है इसीको कहते दुनिया बदलती है।

**\*\*\*\*\***

लापरवाही से ठोकरे खाने से सबकुछ बिगड जाएगा मेहनत मशक्कत इमानदारी से तकदीर बदलती है।

लाने लेजाने और देनेवाला वही है जिसके चाहने से ज़लज़ले,तूफान और आंधी भी अपना रुख बदलती है।

**\*\*\*\*\***

सफर ज़िन्दगी का जितना भी हो पुरा करना पडेगा,आखिरी वक्त का इंतजार नही करना पडेगा।

जमाना चाहे अच्छा या बुरा हो हमे वक्त के साथ चलना पडेगा,हर वक्त को हमे याद रखना पडेगा।

क्या लाया क्या लेजायेगा यह सोचकर जिना पडेगा,जरुरत से ज्यादा यही पर रखना पडेगा।

सूकून से जिना है तो सबको संभालकर रखना पडेगा,नफरत दिलो से मिटाकर प्यार का रिश्ता रखना पडेगा।

**\*\*\*\*\***

लौटाना पडेगा और बेइज्जती होंगी गर किसी से मांगोगे।

न लौटाना पडेगा और न बेइज्जती होंगी गर रब से मांगोगे।

इज्जत दौलत शोहरत तंदुरुस्ती का खजाना भरा पड़ा है दरबार मे उसके.....

देता है वो सब को इतंजार है उसे तुमहारा कब उस से तुम मांगोगे।

**\*\*\*\*\***

जारीया-ए-सवाब का काम जिंदगी मे होजाए तो आखिरत संवार जायेंगी।

दुनिया के एशो आराम मे ये न भुलना जिंदगी की ज्योती एक दिन बुझ जायेंगी।

किसी की हेकड़ी नही चली वक्त के सामने मल्कुल मौत आयेगी तो लेकर ही जायेगी।

हक्कदार का हक्क मार कर जिन्दगी जहन्नुम और आखिरत खराब हो जायेगी।

**\*\*\*\*\***

मर्ज का इलाज वक्त पर न हो तो मर्ज लाइलाज होता है।

लातो की जरुरत जिसे होती उसका   
इलाज बातो से नही होता है।

बेवकुफी मक्कारी रग-रग मे   
भरी हो तो अंजाम बुरा ही होता है।

खौफेखुदा दिल मे रखनेवालो का लाख कोशिश के बाद भी बुरा नही होता है।

**\*\*\*\*\***

नाकामी औरोपर थोपकर कामयाबी खुदकी मेहनत बताना फितरत है इन्सान की।

झूठ फरेब मक्कारी को काबिलियत समझकर खाता है कसम अल्लाह ईश्वर भगवान की।

आच्छाईयो का कत्ल कर मसीहो को सुली चढ़ाना सदीयो से आदत है इन्सान की।

हावी रहा है शैतान हमेशा इन्सान पर इसीलिए हैवानियत की जीत और हार होती है इन्सानियत की।

अल्लाह हु अकबर और हर हर महादेव करते हुए हम तरक्की से कोसो दुर हो गये।

दुश्मनो के खिलाफ लगाने वाले नारे अपनो के खिलाफ ही इस्तेमाल होने लग गये।

जीन दुश्मनो को हमारी एकता ने मुल्क से भगाया वही हमे हिन्दु मुस्लिम कर गये।

आनेवाली नस्ल का सोचो यारो हमारे पुरखे तो ऐसे न थे ये हम क्या कर गये।

**\*\*\*\*\***

बोहत छोटी है दुनिया यारो इन्सान घुम फीरकर अपनी जगह पर ही आजाता है।

तकब्बुर न सिकंदर का टीका था न कीसी का टीकेगा इन्सान खाली हात ही जाता है।

ताकत खुदाकी भुलकर औकात हो ना हो कमीना नाकारा इन्सान भी अकड दिखाता है।

वक्त बडा बलवान है हमेशा रहने वाला अल्लाह ईश्वर भगवान है नाशुक्रा उल्टे मुह गीर ही जाता है।

**\*\*\*\*\***

जबजब करोगे अहसान किसीपर रगरग मे दौड़ेगी खुशियां बेशुमार।

तरीका जो भी हो मक़सद समझता है ऊपरवाला देता है सबकुछ बेशुमार।

ऐश आराम मे जीनेवालो से कईगुना ज्यादा मर रहे है गरीब और बेकार।

याद रहे मरता नही कोई एक निवाला कम खाने से एक निवाले पर जीरहे है बेशुमार।

**\*\*\*\*\***

हवा पानी रोशनी मे दी है रब ने सारी मख्लुकात को जिन्दा रखने की ताकत।

रोशनी हवा मिलकर पोहचाती है दुनिया के हर कोने मे पानी,है ये कुदरत की सदाकत।

कोई न जाने सदियो से बगैर रुके चलने वाले इस अजब सिस्टम की हकिकत।

बकवास और किस्से बोहत बया होते है रब के न जाने कोई सच्चाई और हकीकत।

**\*\*\*\*\***

दिल से बना दोस्ती का रिश्ता खुनके रिश्ते से भारी है।

कृष्ण सुदामा कर चुके साबित दोस्तो अब हमारी बारी है

**\*\*\*\*\***

इल्तीजा है सब से अब न करना नादानी, परेशान है इन्सान इन्सानियत छोडदी तब से।

पलभर की नही फुर्सत दमडी की नही कमाई, हालात ऐसे होगये मोबाइल हात आया तब से।

करे तो क्या करे ये सोचकर हैरान परेशान और आलसी होगया इन्सान करोना आया तब से।

एक और मुसीबत कहते है सब काम चाहिए तो लगलो वैक्सीन वरना निकल जावोंगे घप से।

**\*\*\*\*\***

बेइन्तेहा मोहब्बत हो गर अपनेआप से तो ये ना भुल दुनिया मे अकेला नही है तु सब की यही सोच है।

एक को मारकर दुसरा जिता है यह जानवरों की प्रथा है अब इन्सान की भी होगयी यही सोच है।

खत्म करदी इंसा ने कुदरत की कई नियामते और पेड पौदे नदी नाले बर्बाद करने की सोच है।

पानी हवा रोशनी ही जीवन है ये भुलगाया इन्सान उसे भी बर्बाद करने की सोच है।

**\*\*\*\*\***

औलाद से बढकर न कोई होता है न होगा अच्छे बाप के लिए।

देर करदेते है अकसर कमबख्त बच्चे बाप को समझने के लिए।

दोष नही है ये किसी का पुरा सिस्टम ही बना है माॅ के लिए।

सब कुछ भुल कर माॅ बाप से दुर होजाते बच्चे अपने प्यार के लिए।

हकीकत है ये दुनिया की कहानी नही बनायी है ये तेरे मेरे लिए।

**\*\*\*\*\***

मिट्टी से मोहब्बत करने वाले इन्सान से मोहब्बत करले मिट्टी मे मील जाने से पहले।

मिट्टी से ही बना है इन्सान जात धर्म मुल्क और रियासते बन जाने से पहले।

मरमीट जाना देश के लिए ये खुशनसीबी है गलेलगा सबको शहीद हो जाने से पहले।

तेरे अपने है सब कीसी के बहकावे मे न आ सोचले जज्बात मे आ जाने से पहले।

**\*\*\*\*\***

पचहत्तर सालो से पायी आझादी हमने मतलब नही समझ पारहे आझादी का।

नाच करे बंदर माल खाये मदारी ये हाल होगया है आज हम सब का।

आपस मे ही लडकर हम दामन न छोड पा रहे जहालत रिश्वतखोरी का।

लाखो शहीदो की कुर्बानी से हासिल ये आझादी संभालना फर्ज हर देशवासी का I

**\*\*\*\*\***

बेवकुफी कमज़ोरी-बुराई ,आज की टॅलेन्ट और स्टाईल होगयी।

ताकद स्टॅमिना की फिक्र नही जुबान बोहत लंबी होगयी।

याददाश्त की जरूरत न रही गुगल के भरोसे ज़िन्दगी होगयी।

मीलने जुलने का तरीका पुराना लगता ऑनलाइन ज़िन्दगी होगयी।

**\*\*\*\*\***

अपने आप को जान ले ताकत का अपनी अंदाजा तुझे आ जायेगा।

जिले उसी के भरोसे म़जा ज़िन्दगी का तुझे बोहत आ जायेगा।

माना बेवकुफ बोहत है दुनिया मे क्या तु उन्ही के साथ जीता जायेगा?

मोहब्बत इन्सानियत जगा ले,दुनिया मे जन्नत का मजा मील जायेगा?

**\*\*\*\*\***

नुक्स औरो की तलाशने से पहले काबिलियत अपनी जानले।

मशहूर हस्तीयो की औलादे भी नाकारा निकली है ये बात मानले।

किस्मत का खेल नही ये सजा है बेफिकीरी लापरवाही की।

भुलगया जो परवरदीगार को उसके साथ ये होना है जानले।

**\*\*\*\*\***

बेखौफ थे वबा से चलेगये वो अकेले अकेले होगये है कई आज कल।

अकड कम नही होती बेवकुफो की सिर पे जैसे सिंग आ गये है निकल।

कम्बखत हकीक़त से बेखबर खयाली पुलाव बना रहे है आज कल।

सब को साथ लेकर चल खत्म होगा सफर ज़िन्दगी का आज नही तो कल।

किस किस पे लगावोंगे इल्ज़ाम तोहमत्त अपनी नाकामी की,खुदका कुसुर तो नजर आता नही।

अरमान आसमान छूनेके मेहनत लगन का इरादा नही,भुला उपरवाले को उम्मीद उससे लगाना आता नही।

मांग राह है दुनियावालो से ठोकरे खा खा कर,परवरदीगार से मांगना तो तुझे अब भी आता नही।

आज के माहोल से ले सबक चलेगये ऐसे ऐसे जिनका जाना सोचा न था,अबभी मालिक पे भरोसा तुझे आता नही।

**\*\*\*\*\***

वक्त को रोकना मुश्किल ही नही नामुमकिन है समझोता वक्त के साथ करले समझदारी यही है।

वक्त के साथ खिलवाड करना जहालत है,जरुत पर खुद को बदलदेना अक्लमंदी यही है।

वक्त निगल गया रुस्तम तुर्रम तवंगरो को,मुश्किल है वक्त का खेल समझना सच्चाई यही है।

इन्सानियत भूलकर न जीना प्यारो चार दिन की चान्दनी फिर अन्धेरी रात हकिकत यही है।

होशियार अपने आप को तब समझना जब अपनो की अपने देश की सेवा तन मन धन से कर सको।

मतल्बपरस्त की जबान को लगाम नही होती खुदको ऐसा बनावो कमजर्दो पर बिश्वास न कर सको।

सुकुन की गर तलाश मे हो जारीया-ए-सवाब बनाने की सोच रखना,मदत किसी की करो या ना कर सको।

याद रहे सब कुछ छोड़कर जाना है धनदौलत जमाने से बेहतर खिदमत किसी की कर सको।

**\*\*\*\*\***

जिन्दगी की हर खुशी मीलबाट कर मनानेवाला ही महान है।

खुद के लिए जिनेवाले समाज की बडी बुराई और कूड़ेदान है।

सोने की चिडया था देश मेरा आज भी दुनिया को खिला सके ऐसे बागान है।

समझदार को इशारा काफी अंग्रेजो को बेबस करने वाला नारा जय जवान जय किसान है।

**\*\*\*\*\***

मोहब्बत मे तेरी कायल होजाए हर कोई काम कुछ ऐसे करके दिखा।

जीते तो जानवर भी यहा इन्सानियत के साथ इन्सान बनकर जी कर दिखा।

माना के जमाने का दस्तुर निराला है तु खुद अपनी पहचान बना कर दिखा।

वक्त जाया न कर शिकवे शिकायत मे अपनी काबिलियत दुनियावालो को दिखा।

**\*\*\*\*\***

चलाकी से करते है इज्जत दौलत पर वार, आस पास ही होते है ऐसे कमीने हजार।

गफ़लत मे हो जांवोगे बरबाद,होशियारी से जीना मौका न मीलेंगा बार बार।

मौका विश्वास करने का किसीपर जब भी आये,जांच पड़ताल मे रहना होशियार।

आस्तीन मे सांप पालने का शौक हो तो रखना साथ मे फण कुचलने का हातियार।

**\*\*\*\*\***

वक्त जीन्दगी के इम्तिहान का हर कदमपर आता है तय्यार रहना जरुरी है।

मौका संभलने का मीले और संभल जाए सच मे वही कामयाबी और बेहतरी है।

गर मीली है तन्दुरस्ती की सब से बडी दौलत संभालना उसे जरुरी है।

धनदौलत इज्जतशौहरत आतीजाती रहेंगी ईमान को संभालना जरुरी है।

-**\*\*\*\*\***

कायेनात बनाने वाले ने ऑटो मोड पर रख दिया है दुनिया सूरज चांद तारे।

देख रहा है वो मख्लुकात के करतुत के पलपल के नजारे।

हवा पानी है रहमत उसकी आंधी-तूफान झलझल करते कुछ अलग इशारे।

नाफरमानी रब की मचायेगी तबाही वक्त है संभलजाने का समझो कुदरत के इशारे।

**\*\*\*\*\***

जिस्म और रुह कुदरत की दी हुई अनमोल नियामत दुनिया मे कोई दे नही सकता।

जिस्म को तन्दुरस्त रखना ही सब से बडी इबादत है हरकोई कर ये नही सकता।

ढुढते है सब उसे मंदिर मस्जिद गिरजाघरो मे खुदके अन्दर कोई झाक नही सकता।

इस्तेमाल खूदकी अकल का हो पाखंडीयो के बताये तरीको से वो कभी मील नही सकता।

**\*\*\*\*\***

लालच सुकुन छीन लेगी अपनी काबिलियत पर ऐतबार कर।

एकही रास्तेपर इत्मीनान से चल चढाव उतार मोड की फिक्र न कर।

मंज़िल दुर नही बहाने हजार मिलेगे तु अपनी ओर से देरी न कर।

भरोसा मेहनत इमानदारी पर हो,कल की फिक्र मे आज को दुखी न कर।

चलेगये गांधीजी न रहे नेहरूजी उम्मीद बोहत बंधी है अब आप से मोदीजी।

बोहत कुछ करना है,सफाई अभियान बढिया चला हिम्मत न हारो मोदीजी।

तरक्की की रुकावट रिश्वतखोरी,तारीफे काबिल कदम उठाया आपने मोदीजी।

इतिहास दोहराया जाता है सौ सालो मे, गांधीजी की तरहा अमर रहो ऐसा कुछ करो मोदीजी।

**\*\*\*\*\***

रोता हुआ आता है अपनो को रुलाकर चला जात है इन्सान।

ज़िन्दगी भर खा खुजा कर सोजाता है फिर भी रोता है इन्सान।

कलयुग है ये संभलकर जीना हर कर्मो का फल यही पाता है इन्सान।

जीने की तमन्ना होते हुए भी एक दिन मर के भुलाया जाता है इन्सान।

**\*\*\*\*\***

लूट मची है जात धर्म के नाम पर इन्सानियत को भूलकर।

कहर खुदाका ऐसा आया ब॔द हो गये मस्जिद मंदीर गिरजाघर।

कर इबादत दिलसे कहीभी न सोच यही मिलेगे भगवान काबा काशी देखकर।

जायेगा करोना जरूर सबक पाकिज़गी और इन्सानियत का देकर।

**\*\*\*\*\***

आसमान को छुने की तमन्ना है तो मेहनत लगन इमानदारी के साथ चलना सिखले।

तकब्बुर जिन्दगी का मज़ा नही लेने देगा सर को झुका कर चलना सिखले।

कर्ज जिन्दगी का उतारना है तो किसी के ऑसुओ को पोचना सिखले।

जो तेरा है तेरे पास ही रहेगा इज्जत दौलत शोहरत को संभालना सिखले।

**\*\*\*\*\***

जान से किसी की खेलकर कब तक खुद को बचा पावोंगे,जिस्म खाक होजाता है रुह सब तमाशा देखती है।

हक्कदार को हक्क से कब तक मेहरुम रख पावोंगे,छुपालो जीतना चाहो कुदरत सब तमाशा देखती है।

कुदरत की लाठी मे आवाज नही होती, जब पढती है अगला पिछला सब याद दिला देती है।

कर गुनाहो से तौबा,वक्त गुजर जाने पर कुदरत हात उठाने का मौका भी नही देती।

**\*\*\*\*\***

जाना इस जंहा से हर किसी को है गफ़लत मे भुल न जाना के अमर तु है ।

कुछ दिन की है इज्जत दौलत शौहरत बचाले इसे रहनुमा अगर तु है ।

किराये का मकान है शरीर छोडकर इसे भी जाना है याद रख भूलगया अगर तु है।

खुशियो भरे नग्मे गाकर मज़ा लेताजा दुनियादारी से बेखबर अगर तु है।

**\*\*\*\*\***

कौन अपना कौन पराया समझना बडा ही आसान होता है।

अपना खुन ही खुन होता है गैरो मे कहा वो जुनून होता है।

मतलब परस्त अपने भी होते है पर उन्हे कहा सुकुन होता है।

लालच अन्धा करदेती है उसे जीस मे गैरो का खुन होता है।

अपना तो अपनो को बचाने,साथ निभाने मे मश्गुल होता है।

**\*\*\*\*\***

आलीम था रावन पर खसलत शैतान की तकब्बुर ले डुबा उसे।

मज़ा न ले सका सोने की लंका का रामजी से ठकराना मेहगा पडा उसे।

जीवन बदलने की सिख है दशहरा मे अदना त्योहार न समझो इसे।

जरुरी है रावन को खुद से अलग करना आजका सबक समझो इसे।

**\*\*\*\*\***

रातो की नींद दिन का सुकुन मेहनत मशक्कत इमानदारी इबादत से हासिल है।

तरक्की की जल्दबाजी और लालच मे इन्सान इन सब बातो से बेखबर और गाफील है।

अपनाले मेहनत इमानदारी इबादत का रास्ता तु दुनिया और आखिरत संवारने के काबिल है।

आलस्य बेईमानी तकब्बुर रुकावट है मगफिरत की आसमानी किताबो मे ये नाज़ील है।

**\*\*\*\*\***

कुदरत की सब से आला कारीगरी है इन्सान,पर सुनता नहीं कुदरत के निज़ाम की।

खुद को सबसे अलग समझनेवाला,काबु अंगार पे कर खारहा है गिज़ा जानवरो की।

नफसा नफसी के आलम मे भुल बैठा है, गिज़ा बनायी है कुदरत ने उसे भी किसी की।

जीतेजी मच्छर मज़ा लेते है खुन पिकर, मरने के बाद बनता है इन्सान गिज़ा किडो की।

**\*\*\*\*\***

खुन जो रगो मै दौड रहा है अपना रंग जरुर दिखाएगा। चाहो न चाहो तुम्हे उस मुकाम पर जरुर लेजाएगा।

मानो न मानो भटके हुए को वही सही राह पर लेजाएगा। निज़ाम ये कुदरत का है हीरा कही भी हो अपनी चमक दिखाएगा।

**\*\*\*\*\***

चलेजाते है जानेवाले अपने निशान दुनिया मे छोडकर। सुरत और यादे अपनी सबके दिलो-दिमाग मे छोड़कर।

अलग हसतीया होती है वो जिन्हे याद करते है लोग हात जोडकर। नम होजाती है ऑखे डाॅ.अब्दुल रहमान और लीलाधर सावंत को यादकर।

**\*\*\*\*\***

ऑखो से कई दुर देखती है मन की ऑखे इस्तेमाल कभी उसका किया करो। कुदरत की दी हुयी हर नियामत का सही इस्तेमाल कभी तो किया करो।

दुनिया के इस रंगमंच पर बस किरदार अपना ठीक से निभाया करो। छोटी सी जिंदगी मे प्यार सुकुन की उम्मीद गर रखते हो तो प्यार बांटा करो।

**\*\*\*\*\***

# \*कुदरत\*

हर रात के बाद सबेरा होना है कोई रोक नही सकता।

यह मर्जी उसी की है जिसे कोई देख नही सकता।

अंदाज है सबका अपना अपना मज़हब के दायरे कोई उसे ला नही सकता।

मिलकीयत है हमसब उसकी,कीसी का जोर उस पर चल नही सकता।

फना कर सकता है पलभर मे सबकुछ कोई उसे रोक नही सकता।

मांग उसी से देनेवाला वही है देनेसे उसे कोई रोक नही सकता।

कहानी किस्से और तस्वीर उस की बनाकर जी रहे है कई।

रुह है अंश उस की,न किसी ने देखा है उसे ना कोई देख सकता।

हर लम्हा हर पल कम कर देता उम्र सब की और खुशिंया मनाई जाती है बडे होने की।

क्या क्या चला गया बेपर्वा है उस बात से, फिक्र मे है सब इज्जत दौलत शौहरत कमाने की।

कुदरत की बक्षी अज़ीम नियामत है ज़िन्दगी, कद्र तब करते है जब मोहलत नही मीलती जीने की।

ऑख खुली तब सबेरा समझो जीयो और जीने दो यही तालीम है पीर फकीर पैगम्बरो की।

**\*\*\*\*\***

ताली एक हात से नही बजती सब जानते है पर चुटकी बजती है।

मुल्क का जज्बा दिल मे न हो ऐसा को मग्फिरत नही मीलती है।

पाकिस्तान की जीत पर खुशिंया मनाने वालो खुद को मुस्लमान न कहो।

थाली मे खाकर उसी मे छेद करने वालो को गद्दारो मे गिनती मीलती।

**\*\*\*\*\***

वक्त की कद्र न करने वाले की कद्र नही होती है दुनिया मे।

वक्त ही ऐसी चीज है जो लौटायी नही जासकती दुनिया मे।

खुद की गलतियो से आता है बुरा वक्त सब पर दुनिया मे।

नादानी बेअक्ली ही लाती है मुसीबत घर ये हकिकत है दुनिया मे।

**\*\*\*\*\***

इस से पहले के जमानेवाले भुलजाए,हमे कुछ कर दिखाना होगा।

चमत्कार बोहत हो गये यहां,हमे कुछ अलग कर दिखाना होगा।

नफरत का जहर भर दिया है इबलिस ने सब के सीनो मे.......

नफसा नफसी केआलम मे भुल गये सब, हमे सब को प्यार सिखाना होगा।

उम्मीद,ग़म और उदासी की वजह बन सकती है,बगैर उम्मीद की छोटी सी खुशी भी बडा लुत्फ देती है।

अपनो से गैरों से समाज से न सरकार से उम्मीद रब्बुलआलमीन से कर देर से ही सही पुरी जरुर होती है।

कामयाब लोगों की अवलादें अकसर नाकारा पायी जाती,नाजो से पालकर उनसे बडी उम्मीद होती है।

इतिहास वही लिखते जो उम्मीद खुदा से करते है और नियत कुछ अच्छा कर जाने की होती है।

दीप जले दिलो मे सब के प्यार,मोहब्बत, हमदर्दी के सदा के लिए।

पटाके बजने दो दिमाग मे दोस्ती,रिश्तेदारी हमदर्दी के सदा के लिए।

क्या लाये थे क्या लेजायेगें इस बात को याद रखना सदा के लिए।

जात धर्म को मारो गोली इन्सानियत को बनाये रखना सदा के लिए।।

झुटी शान बडी बडी बाते बेवकुफो की निशानी रुसुक्दार रुतबेदारो से ये कभी न हो।

हकीकत से न मुकर ख्यालो की दुनिया से निकल कुछ हो न हो तकब्बुर कभी न हो।

पहचान खुदकी अलग हो कोई साथ हो न हो भरोसा मालिके-क़ायेनात पर हो।

टल जाऐगा तुफान किनारे लगजाएगी कश्ती हिम्मत ताकत तुफान से बचने की हो।

# \*करोना\*

आयी मुसीबत दुनियापर रोक सका ना कोई।

अच्छे अच्छो को निगल गयी वबा रोक सका ना कोई।

दरवाजे हुए बंद धर्म के ढेकेदारो के रोक सका ना कोई।

कहर है खुदा का या साज़िश इन्सान की बता सका ना कोई।

बेहतर है सबक हर कोई लेले वरना अंजाम इसका जाने ना कोई।

खामीयां तलाश करते है दो दिन के साथी, ज़िन्दगी भर साथ निभानेवाले राजदार होते है।

समझ न पाते है फर्क इन्सान अपने परायों का कम्बखत लालच बेईमानी मे फसे होते है।

मीठी मीठी बातो मे उलझाना बडा आसान होता है निभाने वाले वो नही होते है।

भुलजाते है वो खुदा को पर अंजाम उन का बुरा होता है जब दुनिया से जानेवाले होते है।

उलझन ये कैसी गज़ब की मज़हब के नाम से बट गया इन्सान।

उलझने सुलझाने बनाये मज़हब और उसीमे उलझगया इन्सान।

इस्तेमाल कर रहा नफ़रत फैलाने के लिए मज़हब का इन्सान।

कल्युग का खेल है मज़हब की जरुरत न रही ऐसे जीता है इन्सान।

उम्र कम पडजाती रिश्ते निभानेवालो के लिए,वक्त मुकर्रर है आने जाने के लिए।

इस्तेमाल अपने दिलो-दिमाग और जबान का न कर किसी का दिल दुखाने के लिए।

न समझा है कोई न समझेगा कई संत पीर फकीर आये थे यही बाते समझाने के लिए।

मोहब्बत से जीना सिखलो प्यारो हम यहाँ नही आये है सिर्फ खा पीकर चलेजाने के लिए।

अपनो से मोहब्बत गैरो से नफरत,जानवरो से बदतर है ये हरकत।

आसान होगा जीना सोच बदलकर देखले बदलजायेगी तेरी फितरत।

मेहलों मे रहनेवाले भी दुखी होते है तन्दुरस्ती छोड़ देती जब उनकी संगत।

सुकुन से जीलो पलभर की मोहलत न देती है जिन्दा रहने की शानो-शौकत।

करसकते हो कुछ भलाई तो ना रुको भला खुद का भी होगा इन्तजार तोडा करना होगा।

प्यार-मोहब्बत,हमदर्दी,दया और दौलत के जरुरमंद है कई,तोडा बांटने से कम न होगा।

फिक्र न कर जरुरते पुरी करने का वादा है रब का,इन्सानियत के लिए हमे कुछ करना होगा।

जातधर्म सारे सिखाते है इन्सानियत,हमे सब भुलकर इनसे इन्सानियत का सबक लेना होगा।

वक्त की कद्र करने वालो के संग बीताये वक्त से ज्ञान और सुकुन मीलेगा।

कद्र वक्त की न करनेवाला तरक्की से कोसो लेजाकर दुख परेशानी देगा।

हकीकत है ये ज़िन्दगी की अक्लमंद कुछ बेहतर और बेवकुफ बेवकुफी करेगा।

हासिल करने सूकून जिन्दगी सोचिये हमे क्या करना और कहा जाना पडेगा।

अजब हकीकत है मोहब्बत की,औलाद सेअपनी हर कोई करता है बाकी सब नजर अंदाज होजाते है।

मानो न मानो वही है सच्ची मोहब्बत,बाकी सब मतलब निकालने और जरुरत पुरी करने के तरीके होते है।

भगवान अल्लाह ईश्वर से भी मोहब्बत डर और लालच के मारे करने के लिए सब मजबूर होते है।

दोस्तो की मोहब्बत इन सब से अलग होती है,जात धर्म उच निच काला गोरा अमीर गरीब से वो बेखबर होते है।

वाकिफ है जमाने की फ़ितरत से गर कदम फुंक फुंकर रखना सिखले।

आस्तीन मे सांप पालने का शौक गर है फन कुचलने का हुनर सिखले।

प्यार मोहब्बत के चक्कर मे पच्छताना पढजाये ऐसी बला से दुर रहना सिखले।

खुन का रिश्ता न सही दोस्ती,कुदरत की नियामत है मज़ा आयेगा निभाना सिखले।

दुर करने बुढापा करने चले थे प्यार बचीकुची ताकद न रही दुल्हन हुयी बेज़ार।

हस रहा जमाना,काम का न काज का सेर भर अनाज का,कहकर दुल्हन हुयी फरार।

न बची इज्जत न रही दौलत,बसाने से पहले लुट गया कम्बखत बुढे का घरबार।

बुढापे मे न हो ऐसी कोई मनमानी जिस हाल मे हो उसी मे खुश रहना यार।

निभाने वाली कसम खालो जरुर निभजाती है।

झुटी कसमो को निभाने ज़िन्दगी कट जाती है।

वक्त हर किसी का कट जाता है बाते याद रह जाती है।

कर्म अच्छे हो तो चलाजाता है इन्सान यादे रह जाती है।

खुल के जिन्दगी जीले तेरे अपने बोहत बन जाएगे वरना खा खुजा के सब निकल जाएगे।

बेवकुफो की अपनी दुनिया होती है न वो किसे समझते है न उन्हे लोग समझेगे न समझाएंगे।

अपना बनाना आसान है दिल साफ हो कम बोलो सच बोलो मुसीबत मे सब दौडे चले आऐगे।

साधु-संत,पीर-फकीर का जमाना चला गया खुद को संभलना है समझाने वाले अब न आऐगे।

सेहत अपनी संभालकर जीना काम है हमारा, कुदरत ने दे दिया जो था देना ।

खुद को संभालकर है जीना,जो है वो काफी है,समझो मीलगया जो था मीलना।

अमीरी गरीबी धनदौलत से नही प्यारो सेहत और तन्दुरस्ती से नापना ....

औकात,कुव्वत अपनी बडाई जाय उसी के हिसाब से दुनिया मे सबकुछ है मीलना।

उंचाई कदम चुमेगी ये कोई नामुमकिन बात नही।

मुसीबत से डर जाये जो उसकी कोई औकात नही।

संघर्ष ही सफल करे जीवन फिक्र की कोई बात नही।

संगत का असर होता है जीवन पर,ये किसे याद नही।

काबु खुदपर हो दबाव मे किसी के रहने की जरूरत नही होती।

समझदारी का गर साथ हो,किसी से कभी दुश्मनी नही होती।

सफर जिन्दगी काआगे की ओर चलता है लौटकर जानेकी गुंजाइश नही होती।

खुशहाली तंदुरूस्ती हमेशा साथ-साथ चलती है अगर सोच बुरी नही होती।

दोस्तो से मीलकर बच्चा बनजा कुछ देर बचपने मे चला जयेगा।

महफिल मे सब कुछ भुलकर सूकून दिलो दिमाग को मील जायेगा।

अपनो को दे दे सबकुछ पर दोस्तो को न भुलाना अकेला रह जायेगा।

हकिम का नुसका नही खुदा की देन है दोस्त,जो तूझे बुढा होने नही देगा।

सबके साथ चलना सिखले एक दुसरे के साहरे संभल जायेगा।

अकेला छोटी से ठोकर से भी मुह के बल गीर जायेगा।

माहोल अब ठीक नही है जात धर्म मे बटकर मारा जायेगा।

इन्सानियत को जगाकर जीलो,तेरा मेरा सब कुछ यही रह जायेगा।

सबके साथ चलना सिखले एक दुसरे के साहरे संभल जायेगा।

अकेला छोटी से ठोकर से भी मुह के बल गीर जायेगा।

माहोल अब ठीक नही है जात धर्म मे बटकर मारा जायेगा।

इन्सानियत को जगाकर जीलो,तेरा मेरा सब कुछ यही रह जायेगा।

तकब्बुर खत्म करदेगा दोस्ती रिश्ते-नाते सारे बच सको तो बचना यारो।

नशा ये ऐसा जिन्दा रहता है इंसान,खत्म कर देता है इंसानियत ये प्यारो।

समझोता करलो हालात से तन्दुरस्ती बरकरार रहे ये याद रखना सारों।

न नसीहत है ये न सबक इस हकीकत का तजुर्बा है मुझे मेरे प्यारो।

उजाले मे जिस का कोई अस्तित्व नही वही चिंगारी अंधेरे मे तुरंत नजर आती है।

हिम्मते मर्दा तो मददये खुदा छोटी सी कसती भी समंदर पार कराती है।

दिमाग मे फुतुर दिल मे जलन ज़िन्दगी खुदकी जहन्नुम कराती है।

कुदरत की नियामतो का सही इस्तेमाल हर मुश्किल आसान कराती है।

दोस्ती से बढीया रिश्ता नही कोई दिल से जुड जाता है जान पहचान की जरूरत होती है।

हर रिश्ते को मजबूत बनाकर लुत्फ देती है दोस्ती गर खुन के रिश्तो मे ये मीली होती है।

मिसाल दोस्ती की कई देखी सुनी है,पर ये सच है दोस्ती कृष्ण सुधामा जैसी होती है।

याद रहे दोस्ती मे जात धर्म,उच निच, अमीर गरीब के फासले मीठाने की तासीर होती है।

फासले कम कर देगी मोहब्बत और दिलेरी जात धर्म अमीरी-गरीबी ने बनाये हुए।

खत्म कर देती है रिश्ते नफरत और तकब्बुर,इन्सानियत मोहब्बत ने बनाये हुए।

लुत्फ ज़िन्दगी का उठाना आसान है दोस्त निभाने रिश्ते दिल ने बनाये हुए।

इन्सानियत के हक्क मे कुछ ऐसा हो, फासले खत्म हो जाये मक्कारी ने बनाये हुए।

फासले कम कर देगी मोहब्बत और दिलेरी, जात धर्म अमीरी-गरीबी ने बनाये हुए।

खत्म कर देती है रिश्ते नफरत और तकब्बुर, इन्सानियत मोहब्बत ने बनाये हुए।

लुत्फ ज़िन्दगी का उठाना आसान है दोस्त निभाले रिश्ते दिल ने बनाये हुए।

इन्सानियत के हक्क मे कुछ ऐसा हो, फासले खत्म हो जाये मक्कारी ने बनाये हुए।

जिन्हे जो मीला है वो कम लगता है खुशी की तलाश मे गमगीन हो रहे है वो।

काबिलियत न बढाकर धनदौलत इज्जत शौहरत बढाने की सोच रहे है वो।

राज कर रहे है देशो-दुनियापर जो, मशरुफ है अपनेआप मे फिक्र किसी की नही करते है वो।

मालिके-क़ायेनात के इशारेपर चलती है दुनिया ये बात भी भुल गये है वो।

हर चाहनेवाले के दिल मे रहता हुॅ मै कुनबा बोहत बडा है मेरा दुश्मनो को दिमाग मे भी नही रखता हुॅ मै।

सोच यही हो सब की उम्मीद मै ये करता हुॅ, न जाने कब होजाए अंधेरा ज़िन्दगी मे बस इसी बात की फिक्र करता हुॅ मै।

सियासत मे मोहबत की कोई जगह नही होती न फसाना खुदको इन की बातो मे बस इलतेजा यही करता हुॅ मै।

भुके नंगे गर बादशाह बन जायेगे तो बडो की गुलामी करेगे और अपनो का खुन पियेंगे ऐसी बाते पते की करता हुॅ मै।

ताक मे रहते है कई मतलब परस्त ज़रिया मोहब्बत दोस्ती रिश्तेदारी को बनालेते है वो।

बडा मुश्किल काम है इन से बच पाना आस्तीन के सांप जिन्हे कहते उसी नस्ल के होते है वो।

मोहब्बत और दोस्ती पर कुर्बान हुए है कई,इसी हकीकत का नाजयज फायदा उठाते है वो।

सावधान रह सको तो रहना पर याद रहे, अच्छे अच्छो को जाल मे फसाने मे माहीर होते है वो।

बोहत मिलेगे मतलबी बेवकुफ बनाने वाले ऑख खुली रखनेवाले भी फसते है फंदे मे याद रहे।

इलाज इस बिमारी का नही है यारो मक्कार जाल मे फसा ही लेते है पर लालच से बचना है याद रहे।

तलवार भालों का जमाना चला गया अब बन्दूक,परमाणु बम भी ऑटडेटेड हो गये याद रहे।

मोहब्बत हमदर्दी से बर्बाद करने का तरीका चलता आया है और ता कयामत चलता रहेगा याद रहे।

शक्ल सुरत गर नवाजा है रब ने सिरत बेहतर बनाये रखना इज्जत करेगे सब।

बदसूरत भी गर हो इन्सानियत और मोहब्बत बनाये रखना प्यार करेंगे सब।

सब कुछ गर नवाजा है रब ने सख़ावती बनजावो दुआए देंगे अपने पराये सब।

साधु-संत,पीर-फकीर बनना आसान नही अपनेआप की कुर्बानी देनी पडती तभी याद करते सब।

इन्सानियत की एक मिसाल बनकर सब की जान बन।

बाबु सोना कहकर तु किसी की झुटी अरमान न बन।

मोहब्बत दौलत पाने की लालच मे तु हैवान न बन।

सब्रकर वक्त आनेपर सब कुछ मीलेगा जानवर न बन।

तोडे नही टूटता है दिल का रिश्ता बस निभाना आना चाहिए।

नाम दोस्ती है जिसका बीताया हुआ हर पल याद रखना चाहिए।

अच्छा बुरा वक्त आता जाता रहेगा खुदपर काबु रखना आना चाहिए।

खुदपर कर भरोसा मस्त मगन होकर जीना आना चाहिए।

न सोचो दोस्तो कैसा रहेगा नया साल, सोचो कैसे गुजारेगे हम नया साल।

संभल गये है जो वबा के माहोल से,कोई न कर सकेगा अब बाका उनका बाल।

तकब्बुर से बेहतर है खबरदारी,दुश्मन चाहे बिछाये सतरज की कोई भी चाल।

फैसला इन्साफ के हक मे करता है वो पहचान न पायेगा कोई रब की चाल।

तकदीर किस्मत का कोई वजूद नही है मेहनत लगन कोशिश ही कामयाब करदेगी।

कुछ देकर ही कुछ पा सकोंगे,आलस्य, बढाई,झूठ जिन्दगी नरक समान करदेगी।

कुछ करो फैसला ऐसा इस साल हरकत हमारी हर मुश्किल हल करदेगी।

बोहत ताकत है हमारे वोट मे समझा करो जो न कर सकेगा कोई वो ये करदगी।

जुमलो से बयां इज्जत मोहब्बत दिखावा है सच्ची मोहब्बत को इज्जत के दिखावे की जरुरत नही पडती।

सबकुछ बराबर दिया और देता है रब,शुक अदा करने वाले को बार बार मांगने की जरुरत नही पडती।

हद से ज्यादा कंजूसी,लालच,मक्कारी से कमाई दौलत के लिए सुकुन तन्दुरस्ती आखिर ग॔वानी पडती।

इन्सानियत,मोहब्बत से जीनेवालो की दुनियावाले दिल से इज्जत करते है करवानी नही पडती।

माहौल कुछ ज्यादा खराब है करोना ने फिर सर उठाया है।

एहतियात से बढकर इलाज नही,टीका लगाया या न लगाया है।

न भुलना प्यारो हम ने नादानी गैर जिम्मेदारी से बोहत कुछ गंवाया है।

संभलजावो ऐसे करोना को खत्म करने का जैसे बीडा हमने उठाया है।

दिल खुश होगा पर ऑखो मे नमी होगी।

मुख्तसर सी जिन्दगी मे कुछ कमी होगी।

तलाश हर वक्त हर घडी उसी की होगी।

ना शुक्रो की जिन्दगी मे सुकुन की कमी होगी।

# पिता

इज़हार नही करता पर ये न समझना वो प्यार नही करता।

कुर्बान खुदको कर सकता इसीलिए किसी बात का इन्कार नही करता।

घाटे का सौदा पसंद है उसे औलाद के साथ वो सौदा नही करता।

अपनी अरमानो का गला घोटकर भी कभी वो उफ तक नही करता।

सलामती,तन्दुरस्ती,तरक्की के लिए हरदम वो औलाद के लिए दुआ करता।

अपनी हस्ती को मिटाकर भी तमन्ना सब की पुरी करते करते मरता।

ज़माने मे अहमियत कम है उसकी पर वो मोहब्बत कम नही करता।

दोस्ती रिश्तेदारी और खुद को फर्ज के आगे कुर्बान जो करता।

कम्बखत बाप ही है वो सब कुछ करता पर इज़हार नही करता।

छोड़कर संसार भगवान को समर्पित होना स॔भव नही मोहब्बत से सब को जोड़ना ही अध्यात्म है।

महात्मा,पीर फकीर पैगंबरो के जीवनशैली समझकर लोगो को समझाना ही अध्यात्म है।

न की मोहब्बत जीसने इन्सान से वो भगवान से क्या करे मोहब्बत यही सिखाना अध्यात्म है।

तेरे मेरे बीच का फासला कमकर खत्म हो झगडे धर्म जात के यही सिखाना अध्यात्म है।

खुद से ज्यादा औरो से कर मोहब्बत तु कई हजार गुना वापस तुझे मीलजायेगा।

कोई खर्चे की बात नही है ये बस साफ करले दिल को मोहब्बत करना आजायेगा।

दुनिया वालो को हो महसूस कमी तेरी, काम कुछ ऐसे कर जब दुनिया से चलाजायेगा।

जात धर्म के फितने से बाहर निकल इन्सानियत से जीने मे जिन्दगी का मजा आयेगा।

नफ़रत को हटा दिलो दिमाग से मोहब्बत उभर कर आयेंगी।

हंसी खुशी से जीले बीमारी परेशानी कोसो दुर चली जायेंगी।

डर के माहौल,मुश्किल वक्त मे तेरी नेकी ही तेरे काम आयेंगी।

हर हाल मे शुक्र अदा कर,कही हात फैलाने की नौबत न आयेंगी।

दोस्ती,नियामत है कुदरत की,निभाने की कोशिश किया करो लुत्फ उठावोंगे जिंदगी का।

सारे रिश्तो से बढकर है दोस्ती, हर रिश्ते मे मिलाकर दोस्ती, मज़ा पावोंगे जिंदगी का।

दोस्ती भुलाई नही जाती कई दरारो के बाद भी मुश्किल मे काम आता है ये रिश्ता हमदर्दी का।

हसी,खुशी,मस्ती मे गुजरती है जिन्दगी,

रिश्ता होना चाहिए सच्चे दिल से दोस्ती का।

मुलाकात करले दो मीठी बात करले वक्त बदलने देर नही लगती।

सब कुछ बदलकर माहौल वदल गया है अब कुछभी बदलने देर नही लगती।

खुद को बदलना बाकी है तो देर न कर मौसम बदलने देर नही लगती।

कुदरत का निजाम निराला है ये न भुल उसे कायेनात बदलने देर नही लगती।

हवा पानी खाना सब कुछ तेरे हिस्से का रखा है रब ने खत्म करने की जल्दबाजी न कर।

कम खाना सुकुन से जीना तन्दुरस्ती का राज़ है,खाना जीने के लिए,खाने के लिए न जीया कर।

तरक्क़ी पसंद रहा है हमेशा इन्सान, तरक्क़ी इन्सानियत से दुर हो ऐसे ख़यालात को दुर कर।

मज़हब के ठेकेदारो पर विश्वास न कर, गीता,बायबल,कुर्आन को खुद पढकर समझऔर अमल कर।

इस से पहले के दम निकल जाये दोस्तो के संग कुछ पल गुजर जाये।

अपनो के संग उम्र बीती फिक्रमंद बनकर, कुछ पल दुनिया को भुला जाये।

दोस्ती नियामत है गर कुदरत की क्यु न इसे आज़माया जाये।

आज के दिन ने हमे शान से जीने का हक़ दिया क्यु न लुत्फ उठाया जाये।

गुजरे न वक्त ऐसा के खुद पर ही खुद को रोना आये।

समझदारी मे खुशी है गुरूर की जगह समझदारी आ जाए।

याद रहे लालच मे कही ज़िन्दगी जहन्नुम न बन जाए।

सुकुने जिन्दगी का राज़ है,जो है उस मे तसल्ली होजाए।

तन्दुरस्ती गर सलामत है मुश्किले हल करना नमुम्कीन नही।

लालच,हसत से गर दुर हो तन्दुरस्ती संभालना मुश्किल नही।

कुदरत की नियामतो का लुत्फ उठा सुकुन से जीना मुश्किल नही।

जीयो और जीने दो तवंगर बनकर ता-कयामत जीना मुम्कीन नही।

अपनी जहालत की नुमाइश न कर बगैर मेहनत मशक्कत कामयाबी की उम्मीद न कर।

मिलता है जिन्दगी मे हर एक को मौका गलत तरीके से कामयाबी की कोशिश न कर।

तन्दुरस्ती कुदरत की अनमोल नियामत है तकब्बुर और लालच मे उसे बर्बाद न कर।

जिन्दगी की दौड मे कोई आगे निकलता है निकल जानेदे तु अपनी बारी आने की कोशिश कर।

कद्र कर फिक्र न कर तुझे खिलाने वाले की,उसे खिलाने वाला तुझसे बढकर है।

अब न समझा तो कब समझेगा कम्बख्त, देनेवाला पानेवाले से बढकर है।

हो सके तो बन जा देनेवाला गर कुछ है तेरे पास वरना मांगने वाले तु से बदतर है।

कुछ नही ले जाता है यहा से कोई सद़का खैरात तिजोरी भरने से बेहतर है।

इस से पहले कोई शिकवा करे तु रुसवा न कर किसे।

दिल दुखाने की बाते न कर तु चाहे कुछ दे न दे किसे।

उम्मीद पर कायम है दुनिया नऊम्मीद कर ठुकरा न दे किसे।

वक्त बदलने देर नही लगती मोहताजी रुला न दे किसे ।

खुद है तु दुश्मन अपना औरो पर इल्जाम न लगा।

खुद की अपनी सोच रखऔरों पर इल्जाम न लगा।

बेवकूफ बन बैठा है औरों की सुनकर, अपना दिमाग लगा।

बादशाह बनकर भी आखरी मे खाली हात जाना है....

प्यार मोहब्बत इन्सानियत से जी दौलत के पिछे दौड न लगा।

सब कुछ है तेरे पास छांक खुद के अंदर।

भुलगया तु है इन्सान न है मदारी का बन्दर।

तेरे दम से बनते है सदियों से बेवकूफ सिक॔दर।

अब तो आने दे होशियार समझदाली तेरे अंदर।

मलाल दिलका निकलजाता है रंगीबेरंगी गुलाल चेहरे पे मलते ही क्यु ना होली रोज मनाई जाए।

एक से लगने लगते है सारे होली के रंगों में,इस खुशी के लिए क्यु ना धर्म जात भी भुलाई जाए।

ना सोच कल क्या होगा कर्म अच्छे करने की कोशिश तू करता जा।

भविष्य की चिंता मे दुखी है सब आज की सोच मे तू जीता जा।

क्या लाया क्या लेजाएगा,ये लाने लेजाने का चक्कर भुल ही जा।

बरकरार रहे सुकून खुद का ऐसी हरकतें ही तु करता जा।

मजहब के तरिको मे इन्सानियत न हो वहा न जाना है मुझे।

ज़िन्दगी को किसीके जहान्नुम बनाकर जन्नत न पाना है मुझे।

नफरत,लालच,तकब्बुर गुन्हा है सब पता है तुझे और मुझे।

भुलगये हम ये कर्मो का गठरा ही साथ ले जाना है तुझे और मुझे।

अपनो को ग़मगीन न कर इज्हारे गम कीसी दुश्मन से कर खुशी मीलेंगी उसे।

पता नही जिन्दगी कब कोनसा मोड लेगी जख्मो पर नमक छिडक लेने दे उसे।

कहते है आज़माईश खुदा भी करता,सब्र से बढकर दवा नही,करता है जो करने दे उसे।

कुदरत की मर्जी के बगैर बाल भी बाका नही होता,कोशिश कोई करता तो करने दे उसे।

कितनी फुरसत से उसने औरत को बनाया होगा।

हुर परियों सा हुस्न बडी शिद्दत से लगाया होगा।

मोहब्बत नफरत जलन का तडका उस मे लगाया होगा।

हालत मरदो की देखकर अब वो भी पच्छताया होगा।

गिला शिकवा न कर बिते लम्हो का आज मे जीना सीखलो आने वाला कल भी जानेवाला है।

जिस की लाठी उसी की भैंस वाला जमाना अब भी गया नही,इस से कम और नही कुछ आनेवाला है।

बहुतों ने सिखाकर चले गये जीयो और जीनेदो के तरीके पर न कोई समझा है न समझनेवाला है।

हर हाल मे खुश रहना सिखलो पता नही इस बात का,हात का निवाला भी मुह मे जानेवाला है।

हर तमन्ना हर उम्मीद अपनी गर पुरी कर पाता इन्सान,भगवान इश्वर खुदा का अस्तित्व भुल जाता इन्सान।

मौत का मज़ा चखना है सब को एक दिन इसे नही भुलपाता इन्सान,इसी लिए खुदा से डरता है इन्सान।

कहानी किस्से उसके बोहत बनाये और बनाता है इन्सान,हकीकत से उसकी न वाकिफ है इन्सान।

आपस मे लडकर खुद को जन्नती बताता है इन्सान,हकीकत क्या है जाने सिर्फ अल्लाह, ईश्वर,भगवान।

मांग दुआ रब से सब के लिए,अपने लिए मांगने की जरुरत न पढेगी सब तेरे मांगेगे।

घाटे का सौदा है मतलब परस्ती सब कुछ जमा जमाकर कब तक और कहा भागोंगे।

कुदरत की लाठी मे आवाज़ नही होती,जागोंगे या गफलत की निंदा मे सोते रहोंगे।

बंगला गाडी यही रह जाएगी,सदका जकात खैरात से जारीया-ए सवाब बनावोंगे।

आसान है पार करना जिन्दगी की हर डगर, होसला और सब्र की जरुरत है।

हिम्मते मर्दा ते मददे खुदा,भरोसा करले इसपर किसी और की न जरुरत है।

अकेला लाया गया था अकेला ही छोडा जाएगा डरने की क्या जरूरत है।

समझदार को इशारा काफी है फिर समझाने की क्या जरुरत है

इमान अपना सलामत रख औरो की देखादेखी न कर जन्नत का लालच देकर बेवकूफ बनाने वाले बहोत है।

चोर उच्चको से बढकर कई सफेदपोश हम ने देखे है,मजहब के नामपर ऐश करने वाले बहोत है।

मेहनत लगन इमानदारी से कोई भुका नही मर सकता ऐशो आराम के चक्कर मे भटकने वाले बहोत है।

जिन्दगी का मज़ा लेना है तो इन्सानियत के रास्ते पर चल मजहब के नामपर बहकाने वाले बहोत है।

दिल साफ निय्यत साफ जिसकी उसका दामन हमेशा साफ रहेगा।

निय्यत मे खलल दिल मे दगल उसके मन मे हमेशा पाप रहेगा।

मुश्किल है ऐसों को पहचानना पर इशारा कुदरत से मिलता रहेगा।

ये सोचकर जिना रब के पास जाना है जिससे अपना दामन साफ रहेगा।

नफरत फैलाने का व्यापार करना पढता है तख्तो ताज हासिल करने के लिए।

किसी के जानोमाल की किमत कुछ भी नही है इन कम्बखतो के लिए।

सदियों से चला आ रहा है यह सिलसिला पर वक्त नही है हमे ये समझने के लिए।

जिन्दगी गुजर जाती है हमारी जुल्म सितम सहकर दो वक्त की रोटी कमाने के लिए।

प्यार मोहब्बत इंसानियत या नफरत फैलाना इंन्सान की मानसिकता पर निर्भर होती है।

हमारी ही नही साधु संतों फिर फकीरो की मानसिकता भी उनके अंदर दौड रहे खुन पर निर्भर होती है।

घर ही मंदिर मस्जिद देवालय है हमारी आदत खसलत हमारे माॅ बाप की शिक्षा पर निर्भर होती है।

कुर्सी के लिए नफरत के खेल खेलेजाते है सदियो से,पहचानना मुश्किल बात नही है समझदारी खुद पर निर्भर होती है।

अपनी बेवकूफी गलती से ओरो को उंगली उठाने का मौका मील जाएगा।

बेमतलब की जिद्द से हासिल कुछ न होगा बेइज्जती,तमाचा ही मील जाएगा।

मसला चाहे मजहब का हो नतीजा आखिर मे यही देखने मील जाएगा।

आज आज़ान और चालीसा चल रहा है कल कोई और मसला आ जाएगा।

समझदारी जरुरी है वरना अपने चूल्हे पर दाल कोई और पकाकर खायेंगा।

पांच तत्व से बने है इन्सान सारे फिर अलग-अलग जाति कैसी, पेड़-पौधे, पशु-पक्षीयो मे जाति दिख रही है।

जाति के नामपर कुछ इन्सान बने ऐश कर रहे है,बाकी सारे जानवरों जैसी जिन्दगी जी रहे है।

ब्राह्मण,क्षत्रिय वैश्य और शूध्र ये वर्ण अलग अलग काम के परदेसी आर्यो ने बनाये हूए है।

करतूत ये अंग्रेजों की है दो सौ साल राज कर सके,अब हमारे नेता फायदा उठा रहे है।

जब ऑख खुले तब सबेरा समझ सको तो समझो मीटजाएगी नफरत,सारे धर्मग्रंथ संदेशा यही दे रहे है।

कहा से चले थे कहा आगये सफर जिन्दगी का युही चलता ही रहेंगा।

पतझड़ के बाद बाग फिर से हमेशा खिलता है खिलता ही रहेंगा ।

कुदरत का बनाया हुआ ये जीवन चक्र चलता है चलता ही रहेंगा।

न समझ सका है इन्सान इसे और समझने मे हरदम नाकाम ही रहेगा।

खुदाई दावा फिर भी करता है इन्सान और करता ही रहेगा।

पेट ही पाप करवाता है ज्यादा यह मजबुरी है इन्सान जानवर और परिदो की।

न जाना किसी ने न जान पायेगा कोई मजबुरी कब आदत बन गयी दरिन्दों की।

रुप मसीहा का लिए घुम रहे ऐसे इन्सान जीन की हरकतें है सारी दरिन्दों की।

मुल्ला प॔डीत नेता बडा रहे है नफरत थोडी बची है शराफत ये मेहरबानी है रिंदो की।

कब कहा किस मोडपर घेरलेंगी मुसीबत नही जानता कोई लापरवाह है सारे।

खत्म होंगे सारे खेल दम निकलते ही,तेरे घर से तुझे निकालेगे तेरे अपने सारे।

अब न सोचा तो कब सोचेगा दुनिया हमेशा का घर नही है यहाँ से जाते है एकदिन सारे।

तन्दुरस्ती खुदा की नियामत है याद करके रब को हस खेलकर मोहब्बत से जी ले प्यारे।

तरक्की की विचारधारा पीछे न छुट जाए हमारी लाख कोशिशें करे दुश्मन जमाना।

जहालत नफरत के चक्कर मे बरबाद होकर खाली न कर दे हम देश का खजाना।

माहोल बदल रहे है मतलब परस्त मुल्क का बहकावे मे कम्बखतो के तुम न आजाना।

कुर्सी के चक्कर मे करवाते है दंगे नेता हमारे,हम सब है भाई भाई यह तुम न भुल जाना।

नाजायज तमन्ना शानो-शौकत दे भी देगी पर सुकून छीन लेगी,जायज तमन्ना मन की मुराद पुरी कर सूकुन देती है

माना के बोहत जिद्दोजहद है जिन्दगी मे,मेहनत के साथ इबादत ही हर परेशानी दूर कर सूकुन देती है।

कमीनगी राजा बना सकती है पर मौत पीछा नही छोड़ती,दुनिया की कोई नियामत उन्हें सूकुन से सोने नही देती है।

इतिहास गवाह है जालिमों का अंजाम बुरा ही हुआ है,ज्यादा दिनों तक किसकी मनमानी कुदरत चलने नही देती।

इन्सान को सीधे रास्ते पर ले आने मजहब बने,अब मजहब को ही अलग रास्ते पर लेजारहा है इन्सान।

सब देख रहा है परवरदिगारे आलम बस इसी बात से बेखबर है इन्सान सर पे सवार है उसके शैतान।

कभी मसीहा था मतलब परस्ती राजगद्दी की लालच मे गरीब मूफ्लीसो का दुश्मन बनगया इन्सान।

जिसका कोई नही उसका खुदा है यह हकीकत से न मुकर,शुक्र अदाकर के जी इन्साफ बराबर करता है भगवान।

औरों से नाइंसाफी,जुल्म करके इबादत करना ना कुर्आन सिखाता है ना ये सुन्नते रसूल है।

जालिमों से न डरो पर गलत जिद्द,दिखावे की इस्लाम मे कोई जगह नही यही सुन्नते रसूल है।

चुटकी मे हल होनेवाले मसलों को हवा देनेवाले मक्कार को मौका देना सिर्फे बेवकूफी है।

जरुरत हाजत इबादत के लिए नर्मी मोहब्बता इस्तेमाल कर यही सुन्नते रसूल है।

शुक्र अदा हो रब्बुलआलमीन का हर हाल मे तंदुरुस्ती की अन्मोल नियामत के लिए।

त॔दुरस्ती खुदा की अमानत है उसे संभाना इबादत है बाकी सब है दुनियादारी के लिए।

तंदुरुस्ती देंगी मौका भक्ति और इबादत का जीतना चाहो वरना आये है सब जाने के लिए ।

हकीकत सच्चाई सिर्फ यही है,इन्सान तंदुरुस्ती ग॔वाता है मौज मस्ती दिखावे के लिए।

अपना अस्तित्व और पहचान छुपाकर लढाई होती है आज यहाँ,ऑन लाइन का जमाना है।

चीटी मारने की ताकत नही जिनकी बम बरसाने की बाते होती,सोशल मीडिया का जमाना है।

ऑन लाइन इश्क ने तो हंगामा करदिया एक साथ कईयों से चॅटीग होती,मस्ती मारने का जमाना है।

डीपी और नाम किसी का लगाकर बदसूरत और उम्र दराज भी मशगूल है, फांसने फसाने का जमाना है।

रोझे की परहेजगारी रमजान की इबादत से हुए दिल साफ,करना है अब सब को माफ।

नफरत न पनपे दिलो मे ईमानदारी मोहब्बत, सखावती से करे हर किसी के साथ इन्साफ।

मुह की मिठास बिमारी ला सकती है दिलों की मिठास सुकून दिलाती गर मकसद हो साफ।

मिटजायेगे सारे गिले शिकवे \*ईद मुबारक हो\* कहना सबको सच्चे दिल से और साफ साफ।

जीते जी कुछ ऐसा किया जाए के कुछ तो लोग याद करे।

जिते तो जानवर भी है इन्सान होने का कुछ तो हक्क अदा करे।

खुन के रिश्ते निभाने नही पडते,दोस्ती के रिश्ते निभाया करे।

राम-लक्ष्मण,कृष्ण-सुदामा,हिर रांजा ऐसे बनकर जीया करे।

कुछ ही पल होते है खुद के लिए बाकी जिन्दगी पुरी बटी हुई है।

कर उसी से हासिल तन्दुरस्ती,सुकून, जिन्दगी आधी सोकर कटी हुई है।

सोच कुछ अपना जान तेरी दुनियादारी और रिश्तेदारी मे बटी हुई है।

तन्दुरस्ती हजार नियामत है जिसने गंवाई उसकी तकदीर फुटी हूई है।

ईश्वर की लाडली है वो,उसकी बनायी दुनिया बसाती है जो।

दुख सहकर सबको दुनिया दिखाती है वो, ममता,करुणा गुन ईश्वर के खुद मे बसाती है जो।

औलाद के लिए जीती और मर जाती है वो, नमन है उसे ईश्वर के बाद भगवान कहलाती है जो।

मेहनत मुशक्कत के बाद डिग्री पदवी या उपाधि प्राप्त की जाती और कुछ वक्त ही पेठ भरने काम आती है।

कोई मेहनत नही लगती ईमानदार,सच्चा और शरीफ ये उपाधि हासिल करने जो जिन्दगी भर काम आती है।

घाटे का सौदा तो इन्सान को न पसन्द था न होगा, पता नही फिर भी यह बात उसे समझ मे क्यु नही आती।

काश यह बात सबकी समझ मे आती तो दुनिया की दौलत के साथ साथ दिन की दौलत भी कमाई जाती

जाना कहां था कहां ले आयी है जिन्दगी जरा सोचकर देखो।

समय का खेल है सब जिन्दगी मे कभी तो पलटकर देखो।

जब कभी उदास होगे तो अच्छे दिनो को याद कर के देखो।

दुनियावालो से उम्मीद न रख अपनी मेहनत पर एतबार कर के देखो।

गुजरे हादसों के लम्हों को याद कर के और दुखी न होना।

गया हुआ पल लौटकर कभी नहीं आयेगा होगया जो था होना।

दुनिया है एक तमाशा ऊपरवाला मदारी और तु है एक खिलोना।

भरोसे पर किसी के न रहना आगे की सोच बंद करके सब रोना धोना।

घनघोर अंधेरे मे भी दिल में उजाला रख काम तेरे ही आयेगा।

याद रहे नफ़रत और गुरुर हमेशा बेड़ा गर्ग करके ही जायेगा।

लड़कर झर जमी झेवर क्या कोई साथ लेगया है या लेजायेगा।

हालात ऐसे हैं पता नहीं कौन कब अचानक से निकल जायेगा।

अच्छा बुरा खुद को समझना है समझाने कोई नहीं आयेगा।

जख्मो को कुरेदकर दर्द ही पावोंगे बेमतलब की लडाई से ज़िन्दगी जहान्नुम कर जावोंगे।

जात धर्म के दंगे करवाने वाले परदेस मे बस जाएंगे, हम तुम जेल या यम सदन में जावोंगे।

कहां लेजावोंगे मंदिर, मस्जिद गिरजाघर अकेले खाली हात आये थे अकेले खाली हात ही जावोंगे।

प्यार मोहब्बत, इन्सानियत से जीकर ही जीतेजी दुनिया मे जन्नत का मज़ा ले पावोंगे।

मन ना करे जो वो ना कर पर जो करने को करे वो भी सोच समझकर कर।

मन का ना कोई भरोसा रहा, जाने क्या करें,सब ठीक करना हो तो मन को काबू में कर।

सौ चुहे खाकर बिल्ली हज़ को चली,ये कहने का मौका न दे अच्छा कर न कर बुरा कीसी का न कर।

आया था जिसके भरोसे जाना भी है उसी के भरोसे खुश रह किसी की फ़िक्र न कर।

\*

अंगार लगाने के कई तरीके है बुझाने के लिए पानी काफी है।

जालीम कई आये और चले गये ‌मोहब्बत अब भी बाकी है।

दिन दुगनी रात चौगुनी तरक्की हो रही है अब क्या बाकी है।

कऱोना रूलाकर गया अब मेहंगाई मारेगी सोचो और क्या बाकी है।

जीतेजी ना पढेगा कभी पच्छताना गैरो की सुनकर अपनो के दिल को न कभी दुखाना।

अपने अपने ही होते है कभी जात धर्म पे ना जाना भुल न जाना मतलबी है जमाना।

सादगी सच्चाई का ही आला मकाम है गुरूर करने वालो को ना बक्शता है खुदा ना जमाना।

हर मखलुक की फिक्र करने वाला मालिके क़ायेनात है उसे‌ सब पता किसे क्या देनालेना।

जलाने वाले‌ ही नमक छीडक रहे जख्मों पर अपने ही आस्तीन के सांफ बन गये।

समझदारी ही रोकेंगी तबाही मक्कार तो जाल बिछाकर हट गये।

तोहीन पीर फकीर पैगम्बर की अपना असर दिखाती है,पर मक्कार आपनी रोटी भुन गये।

खुलजाए आंखे तो इन्साफ जरुर मीलता है गफलत मे कमब्खत अपना काम कर गये।

दिखावे से दुनिया पहचानती जरूर है चाहे वो कुछ जानती न हो।

कर्मो से जिसे जानती दुनिया उसे भुलाती नही चाहे उसे पहचानती न हो।

गुनवान सुफी लोगो की बात है ये मतलब परस्ती जिन से कोसो दुर हो।

खुश नसीब वो है जिन्हे मां बाप की दुआ मीले और दुनीया वाले उनसे खुश हो।

सुकुने दिल की तमन्ना सच्चे दोस्त यारो के भरोसे करना।

आस्तीन के सांपो को यार दोस्त समझने की गलती न करना।

न जमाना खराब होता है ना वक्त दिमाग अपना ठिकाने रखना।

हमदर्दी का ज़माना नही रहा सिखले तु खुद अपना ख्याल रखना।

ख्यालो की दुनिया से बोहोत दुर है प्यारो हक़ीक़त की दुनिया।

कलयुग है ईमानदारों से कम,बेईमानों से चलती है दुनिया।

न रुप बदला न रंग जैसे चलती‌ थी उसी रफतार से ही चलती है दुनिया।

तबाही मचाती आयी है नफरत हमेशा,मोहब्बत पर ही टिकी है दुनिया।

कब तक करोंगे मनमानी कुछ ही दिनो की होती है जवानी।

तन्दुरूस्ती हजार नियामत लापरवाह को याद आती है नानी।

बंद रहते है दिमाग के दरवाजे करता है तब इन्सान अपनी मनमानी।

ज़र ज़मीन जेवर के नशे मे भुल जाता है क़यामत की निशानी।

ऐतेबार किस पर करें अपने ही दिल से पुछले भरोसेमंदों की कमी है।

ज़माने को दोष न देना झांक अपने अंदर देख तुझ में क्या कमी है।

नाच करे बंदर माल खाए मदारी यही चलता है आंखें फिर क्युं नमी है।

तख्तों ताज पलट जाते है पल भर में जहां हमदर्दी मोहब्बत की कमी है।

उम्र भर तिजारत हुई धन कमाने सखावत हुई इज्जत कमाने।

कम गर मीला कुछ तो बाकी बची उम्र लगी दिल को समझाने।

दुनियादारी का पुरा कर सब कुछ होड में लगते हम आखिररत कमाने।

चलती है जिंदगी ऐसी ही सदयों से इन्सान नहीं बदला,बदलते है ज़माने।

# \*आज के हालात\*

न सर पे ताज न हुकूमत न राज न हुआ आजतक ऐसा वो बेताज बादशाह था।

बेशुमार दिलों को जीतने की जीस की ताकत ऐसा सबका प्यारा वो शहंशाह था।

इज्जत शोहरत दहशत ऐसी बनाई सेना की जै़से हर सिपाही एक शहजादा था।

आस्तीन में सांप पलते रहे,फंन कुचलने का हुनर किसी को आता नही अब हर पल यादों में बादशाह था।

वक्त मदारी इंसा है बंदर नचाता है सब को वक्त उम्र भर।

सब‌ जानते वक्त सबकुछ है इन्सान की औकात है मीट्टी‌ रत्ती भर।

तकब्बुर में गुम होता है ऐसे इन्सान कुछ याद न आता है उसे पल भर।

चला जाता है सब कुछ छोड़कर फिर भी लालच कम नहीं करता है उम्र भर।

आलस्य में ग़ज़ब का मजा है, नाकामी बिमारी उसकी सजा है।

तकब्बुर का अलग ही नशा है, आखिर में मोहताजी दुर्दशा है।

बेईमानी से बढ़कर कला नही,इस बिमारी की कोई दवा नहीं।

हर चीज का मोल है,अनमोल है नेकी इमानदारी का कोई मोल नहीं,

सादगी मे सुकुन की तलाश न करनी होगी, मक्कारी बेचैन कर देंगी।

कुदरत का निज़ाम है ये किये कर्मो को नियती कभी माफ नहीं कर देंगी।

चाहे लाख संभलकर कदम‌ रखो कुदरत अपना हिसाब बराबर कर देंगी।

दुख सुख एक सिक्के के दो बाजु है कुदरत जब चाहे सिक्का पलट देंगी।

मेहनत कई सालों की डिग्रीयां दिला सकती,पर राज गद्दी पर हमारे यहां कोईभी बैठ सकते।

जरुरी है पढ़ाई अफ़सर इंजीनियर डॉक्टर शिक्षक बनने के लिए PM CM चायवाले रिक्शेवाले भी बन सकते।

किसी का दुर्भाग्य किसी की खुशनसीबी ये जो हो रहा है समझदार यह सब नहीं कर सकते।

बात पते की है लोकशाही में घराने शाही नहीं चल सकती ऐसे इरादा रखनेवाले कुछ भी कर सकते।

हवा न बनजाए बाते दवा की तरह इस्तेमाल करना बेहतर होगा।

किसी भी रूप में हो मदद जरूरतमंद को करना बेहतर होगा।

मशवरे किमती हो या न हो कद्रदान को करना बेहतर होगा।

मतलबपरस्त है जमाना दुआओं के लिए कुछ करना बेहतर होगा।

सबब परेशानी का किसी की न बन जायेगा मुश्किल हालातो से वो हंस‌ के गुजर जायेगा।

औरों की खुशी में शामिल जो न‌ हो पायेंगा, सब कुछ पाकर भी रोता ही रह जायेंगा।

हकीकत और कुदरत का निज़ाम यही है बोयेगा वहीं पायेंगा।

समझाना मुश्किल है ये गुजरकर हालातों से ही सब कुछ समझ में आ जायेगा।

जज़्बातो की कद्र दिल से जुड़े या खुन के रिश्ते नहीं कद्रदान ही करते हैं।

सब कुछ बर्दाश्त कर लेते है कद्रदान,कद्र करते जीसकी रूसवा उसे नही करते।

इन्सानियत इसी पर टिकी है, इन्सानियत रखनेवाले मज़हब के सहारे दिलपे वार नही करते।

ईश्वर को याद करने का सिर्फ तरीका सिखाता है हर मज़हब, यही समझने की कोशिश हम नहीं करते।

मासुमियत कुछ ही दिनों की मेहमान होती दुनियादारी से बेखबर बेफिक्र रखती है।

बचपना मजेदार जरुर होता, नीव दुनियादारी की यही पर सारी दुनिया रखती है।

जवानी जिंदगी का मज़ा देती, सारी अच्छाई बुराईयों से कोसो दुर रखती है।

बुढापा की कमजोरी ईश्वर के कदमों में ले जाती, यादें ज़िन्दगी की ताज़ा रखती है।

इजहारे मोहब्बत से कोई दोस्त यार नहीं बनता दिल का रिश्ता है ये इकरार करने से नहीं बनता।

बस जाएं कोई दिलोदिमाग में दिल को तसल्ली देनेवाली अदा से,उस से अच्छा कोई यार नहीं बनता।

अजीब रिश्ता है दोस्ती कद्र हो न हो इस रिश्ते की सच्चा दोस्त कभी गद्दार नहीं बनता।

खुन के रिश्तों में गर मील जाएं दोस्तीे,दुनिया मे इस से बढ़कर कोई रिश्ता नहीं बनता।

तकब्बुर से जहरीला होता है शक निंद हराम कर तबाही मचाता है।

धनदौलत जहागीर होकर भी पाखंडियों के कदमों में ले जाता है।

दवा नहीं शक की बोहोत तड़पाता इसीलिए लाइलाज मर्ज कहलाता है।

आंखों देखी झुठ हो सकती हैं कानों पर अंधा विश्वास न करनेवाला सुकुन से जीता है।

नाच करके बंदर माल खाये मदारी सच हो रही है ये कहावत।

हिन्दु मुस्लिम सिख ईसाई थे और रहेंगे भाई भाई ये है हाकीकत।

गद्दी के चक्कर में भुल जाते मक्कार,हर हिन्दुस्तानी के खुन में है मोहब्बत शराफत।

हजारों सालों से लुटते आये है हमे पराये,अपने लगे है लुटने किस से करे हम शिकायत।

जिंदगी का गीत कोई गुनगुनाता है कोई‌ हंस कर गाता है कोई रो रो कर चला जाता है।

अपनों के लिए जीकर भी भुलाया जाता हैं औरों के लिए कुछ करनेवाला याद किया जाता है।

ऐसी ही सोच मे जीकर सब कुछ करता है इन्सान पर खुद ही को भुल जाता है।

याद रहे द्वेष मत्सर लालच से दुर दया करूणा प्रेम के साथ साधना में खुद को पहचाना जाता है।

रब का दिया सब के पास है अहसास किसी किसी को है बाकी सब गाफिल है।

तन्दुरूस्ती से बढ़कर कुछ नही माजुर बिमार ही समझ सकते हैं बाकी सब गाफिल है।

अदायगी कुदरत के हुक्म की हो यही इबादत है इसे भुलाने वाले इन्सानियत के कातिल है।

छोड़ जाना है जिसे उसी के लिए इन्सानियत का कत्ल करते है जो, हम ही वो जाहिल है।

किस मोड़ पर मील जायेगी तेरी मंजिल तुझे पता नहीं तु चलता जा।

निराश दुनिया से हो अगर शिकवा न कर रब निगेहबान है तु चलता जा।

मोहब्बत ही पहली और आखिरी मंजिल है मजा इसका जिंदगी भर लेता जा।

सबक पीर फकीरो के बोहत पढ़ें सुने होंगे कुछ अपने दिल की भी सुनता जा।

मोबाइल नहीं साथ तो आधुरा मेहसूस होने लगा है।

दुनिया से करीब और अपनों से फासला दुर करने लगा है।

ग़ज़ब की चीज़ बनाई मोबाइल

बगैर इसके जीना दुश्वार लगने लगा है।

घड़ी-रेडियों,कॅमेरा-टेप विडियो -टीवी का कातिल सबसे प्यारा लगने लगा है।

भगवान अल्लाह ईश्वर के घर मंदिर मस्जिद गिरजाघर,जाने से पहले यहां दिल साफ कर।

सारी मखलुकात है मिल्कियत उसकी,मोहब्बत सबसे कर फिर सज़दा कर।

लब पे राम बगल में छुरी ऐसे न होंगी कोई हसरत पुरी,कुछ जिंदादिली का काम कर।

इन्सानियत से बढ़कर कुछ नहीं देखता है वो सब,तु अपने तरीके से रब को याद कर।

शिकवा शिकायत का मौका न मिलगा,दिल की बाते बयां करने देर न कर।

ग़लती इन्सान की फितरत मे होती है उसे दोहराने की फिर ग़लती न कर।

शौहरत इज्जत दौलत इन्तज़ार में रहती है‌ इमानदारी से हासिल करने की कोशिश कर।

खरगोश की तरहा बेफिक्र रेस मे शामिल न हो सुकुन से कचवे की चाल चला कर।

दुष्टों का कर्दनकाल निष्टो पर दया दृष्टी और हटा देंगे मायाजाल।

आये हैं गणपती बाप्पा दिखायेंगे ऐसा अजब गज़ब अपना कमाल।

मील कर मना लो यह अद्भुत त्योहार जॉनी जनार्दन और जमाल।

तिलक ने दिखायी थी इस त्योहार की अहमियत आवो हम भी करें कुछ कमाल।

# \*गणपती बाप्पा मोरया\*

**\*\*\*\*आरती\*\*\*\***

सुखकर्ता दुखहर्ता आये हैं घरघर। सुख और समृद्धि अब लायेगें घरघर।।

सुखकर्ता दुखहर्ता आये हैं घरघर। सुख और समृद्धि अब लायेगें घरघर।।

दुख दर्द निवारण होंगा सभी का,पार्वती पुत्र आये है घरघर।

दुख दर्द निवारण होंगा सभी का,पार्वती पुत्र आये है घरघर।

मुफ्लीसी बेकारी करोना का कर्दनकाल बनकर आये है घरघर।।

सुखकर्ता दुखहर्ता आये हैं घर घर।सुख और समृद्धि अब लायेगें घरघर।।

खुशियों भरा समा हुआ है सारा, गणपती बाप्पा छाए है घरघर।

खुशियों भरा समा हुआ है सारा, गणपती बाप्पा छाएं है घरघर।

शुभ लाभ सदा विराजेंगे यहां, बाप्पा गणपती आये हैं घरघर।।

सुखकर्ता दुखहर्ता आये हैं घरघर।सुख और समृद्धि अब लायेगें घरघर।।

सुखकर्ता दुखहर्ता आये हैं घरघर।सुख और समृद्धि अब लायेगें घरघर।।

गुनाहो से पडदा हटाने की देरी है,रहमतों की बारिश बरसने देर नहीं लगती।

मोहब्बत से सब को गले लगाने की देरी है, तकब्बुर को खत्म होने देर नहीं लगती।

नफ़रत को दिल से मीटाने की देरी है, जिंदगी को स्वर्ग होने देर नहीं लगती।

देता है सब को रब जायज़ तमन्ना की देरी है,उम्मीद पुरी होने में देर नहीं लगती।

उम्मीदो का दामन न छुटे कभी लुत्फ जीनेका आ जायेंगा।

मायुसी के चंगुल में फंसकर जीना दुश्वार हो जायेंगा।

होनी को टाल नहीं सकते बेफ़िक्री से टेंशन कम हो जायेंगा।

कल की न सोच आज में जीना सिखले बड़ा मज़ा आयेंगा।

अलग अलग शक्ल सुरत किस्म की बनाई हर जात कुदरत ने वही है जात हकीकत में।

दौलत ताकत के जोर पर कुर्सी के लिए बनाई जात इन्सानो ने षड्यंत्र है ये हकीकत में।

चलता रहेंगा यह क्युकी तड़का लगाया है इसपर आरक्षण का यही बात है हकीकत में।

इस्तेमाल हो रहा है अब भी इस नुस्खे का नफ़रत भरी जा रही हमारी रगरग में।

चले थे कहां,कहां पोहच गये, पलट कर देखा तो कुछ साथ है,कुछ अपने ठिकाने पोहच गये।

यही है जिंदगी समझने में थोडी देर कर गये,जमाना कुछ कहता रहा हम अपनी राह पर चलते गये।

कहीं मुकद्दर ने रोका तो परेशान हो गये,गाफिल था जमाना हमसे हम उसी की सोचकर‌ खुद हैरान हो गये।

थकावट दिलोदिमाग पर ऐसी छायी,अपनी सोचने का वक्त आया तो सोचते ही रह गये।

हंसी खुशी बीते जिंदगी इस से बढ़कर क्या चाहिए।

तन्दुरूस्ती सलामत रहे इस से बढ़कर क्या चाहिए।

आसान है जीतेजी यह सब पाना समझदारी और त्याग की आदत होनी चाहिए।

लालच नफ़रत गुरुर,खुशी और तन्दुरूस्ती को बिमार करती है इस से बचना चाहिए।

अहसास है प्यार,बयां करना कीसी शायर के बस की बात नहीं।

नग़मो गीत ग़ज़लों ने कोशिश जरुर की है पर मुकम्मल बात नहीं।

बेवकुफ बनजाते है कई चिकनी चुपड़ी बातों से उस में प्यार की कोई बात नहीं।

किस्से सुने हैं प्यार में जीने मरने की कस्मों के पर उन में आहसास की बात नहीं।

प्यासे को पानी भुके को खाने की कद्र ना हो यह नामुमकिन है पर ऐसा होता है।

औलाद को मांबाप की,मांबाप को औलाद की फ़िक्र ना हो यह नामुमकिन है पर होता है।

नामुमकिन गर मुमकिन हो सकता है,खुदा ही जाने मुमकिन कामों में देर क्युं होता है।

नफ़रत दिलों से हटाने, इन्सानियत को जगाने ,खुदा ही जाने देर क्युं होता है।

जो हो रहा है शायद उसी की जरूरत थी सिवाय इसके कोई इलाज नहीं यही माना करो।

इस से पहले जो हो रहा था क्या वही ठिक था, सोचों समझो सच्चाई जाना करो।

हुकुमत की ही नहीं हमारी अपनी जिंदगी की यही सच्चाई है सुकन से हालात पर गौर करो।

हम से बढ़कर जिंदगी हो आनेवाले पीड़ी की यही सोच कर कदम आगे बढ़ाया करो।

तन्दुरूस्ती सलामत और आजाद रहे,बोझ न बने किसी पर इस से बढ़कर नियामत नहीं।

सब कुछ होकर भी सोने के पिंजरे में गुजरे जिंदगी इस से बढ़कर लानत नहीं।

कंगाल परेशान और तवंगर भी परेशान यही कुदरत का करिश्मा और किसी की जुर्रत नहीं।

अच्छा-बुरा,तक्लीफ-परेशानी, बिमारी इन्सान खुद बुलाता है, रब को इतनी फुरसत नहीं।

तलाश खत्म न होंगी तलाशते ही रह जावोंगे अल्लाह ईश्वर भगवान को गर विश्वास न किया।

मंदिर मस्जिद गिरजाघर में सुकुन न मीलेंगा,बेकार खंन्डर नजर आयेंगे गर विश्वास न किया।

विश्वास पर क़ायम है दुनिया खुद के अंदर झांककर सोच दिल दिमाग का इस्तेमाल तुने कैसे किया।

देखा ना किसी ने उसे सोच भी अधुरी पढ़जाती है,क़ायेनात का निर्माण किसने और कैसे किया।

हमदर्दी प्यार और विश्वास से ज्यादा उम्मीद दोस्ती को बरकरार नहीं रख पाती।

मतलबपरस्तों की दोस्ती लाख कोशिशो के बाद भी बरकरार नहीं रह पाती।

अजीब सा सुकुन देनेवाला अहसास है दोस्ती निभाली तो कभी तोडी नहीं जाती।

लुत्फ़ दोस्ती का उठाना आसान है अच्छे यारों के साथ जिंदगी बड़ी आसान हो जाती है।

तकदीर तसल्ली देने वाले शब्द है वजुद नहीं इसका कोई मेहनत पर भरोसा कर।

वक्त बदलने देर नहीं लगती कर्मों से ही सबकुछ बदलता है खुद पर भरोसा कर।

अच्छी सोच और तरक्की की उम्मीद गिरने नहीं देंगी कोशिश हमेशा किया कर।

समझदारी में सुकुन है बेवकुफी जल्दबाजी में खुद कोई मुसीबत खड़ी न कर।

एक कदम चलने में भी संघर्ष है किसी माजु़र से पुछले।

सांस लेने में भी संघर्ष है किसी बिमार से पुछले।

परेशानी खत्म होगी अपने से गरीब कमजोर को देखले।

हरपल शुक्र अदा कर रब का होता है क्या फिर देखले।

# \*सफ़र जिंदगी का\*

पुरानी हर बात याद आने लगी है।

जिंदगी मधुर गीत गाने लगी है।।

बचपन की मस्ती वो दोस्ती के किस्से।

दोस्तों की हर चीज में बराबर के हिस्से।

भुलाये न भुलते है लड़ने झगड़ने के किस्से।

अम्मा की झुंठी डांट के वो सारे किस्से।

पुरानी हर बात याद आने लगी है।

फिजाएं मीठी धुन गुनगुनाने लगी है।।

जवानी देहलीज़ पर आने लगी। बेफ़िक्री थोड़ी कम होने लगी।

मोहब्बत मे रातों की निंद जाने लगी।

जिम्मेदारीयां बढ़ी दूरियां दोस्तो से होने लगी।

पुरानी हर बात याद आने लगी है।

वक्त की रफ्तार बढने लगी है।।

जिम्मेदारी से फुरसत मीलने लग़ी।

बुढ़ापा करीब जवानी दुर जाने लगी।

बचपन की शरारतें याद आने लगी।

दोस्तों की कमी महसूस होने लगी है।

पुरानी हर बात याद आने लगी है।

मुस्कुराहट चेहरे की लौट कर आने लगी है।।

जिंदगी का नासुर बनने से पहले नफ़रत के ज़हर का इलाज जरुरी है।

बगैर ज़रासिम की ये बिमारी जु़बान से फैलती,

मोहब्बत से निकालना जरुरी है।

सुकुन खुदका छीनना फितरत इस की इन्सानियत खत्म करना आदत इस की....

किसी मज़हब में जगहा नहीं इसकी दिलोदिमाग,

समाज से निकलना जरुरी है।

छोटी सी मुश्किल से परेशान न हो शायद किसी बड़ी मुसिबत से बचाने आयी है।

जिंदगी की अनमोल नियामत जिसने दी उसी की निगरानी में चलती आयी है।

सर को उठाकर चलने वाले की

अक्सर ठोकर खाकर अक्ल ठिकाने आयी है।

जीयो और जीने दो कई समझा कर चले गये तब इन्सान की अक्ल थोडी ठिकाने आयी है।

उम्मीद पर दुनिया कायम है अपनी मेहनत लगन अक्ल से उम्मीद रख।

अपनों या गैरौ से उम्मीद दुख का सबब न बन जाए तु रब से उम्मीद रख।

बयां न कर सकता कोई सच्ची मोहब्बत इज़हार करने वालों पर एतबार न रख।

खुदा ही जाने दिल की बाते,हर मुश्किल आसान होंगी रब के हवाले सबकुछ रख।

शुक्र अदा कर रब का बीन मांगे देता है वो हजारो नियामते।

उम्मीद न कर किसी से लुत्फ उठा जो मीले मान उसकी नियामते।

औकात नहीं किसी मख्लुक की एक दाना भी खिला सके किसी को....

हर ज़र्रे में क़ारीगरी उस की ग़ैब से पोहचाता है हर मख्लुक को नियामते।

मौहताज होकर कमाई इज्जत दौलत सर उठाकर जीने नहीं देंगी।

खुद्दार गर है वक्त निकाल जायेगा लाचारी तुझे इज्ज़त से मरने नहीं देंगी।

इज्जत देकर बेइज्जती करने की हरकत दुवावों से बोहोत दुर कर देंगी।

जीले जीभर के सच्घी प्यार मोहब्बत हमदर्दी कभी दगाह नहीं देगी।

नर्म मिज़ाज तरक्की की उम्मीद जिंदगी का सफर आसान और कामयाब कर देंगी।

सोच अच्छी और मेहनत का डर न हो,तन्दुरूस्ती की सलामती इज्जत की जिंदगी देगी।

लाना लेजाना कुछ नहीं ऐसा सफर है जिंदगी,हलाल कमाई दिल को सुकून और राहत देंगी।

प्यार मोहब्बत हमदर्दी ही रिश्तो को मजबूती और खुद के साथ देश को उन्नति देंगी।

मौसम की तरह बदलने की फितरत सिर्फ इन्सानो में ही है।

जानवर पेड़ परिंदे ना कभी खुद बदलते न अपनी अदा बदलते हैं।

सुना है अल्लाह को सब से प्यारी जात है इन्सान की ।

सच्च यही है सिर्फ इन्सान ही नहीं सुनता नसीहतें उस की।

रामजी जो कहगये वैसा ही कुछ हम भी अब की बार कर के दिखाएंगे।

रावन हर साल जलाते हैं आपने अंदर बसे रावन को अब जलाकर दिखाएंगे।

मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर करना हम भी यही दुनिया को दिखाएंगे।

बोहोत हो गई नफसानफसी की जिंदगी अब इन्सानियत को जगाकर दिखाएंगे।

सब से बचकर निकल सकते हो वक्त के शिकंजे से बचना मुश्किल ही नही नामुमकिन है।

बादशा हो या फकिर वक्त किसी का गुलाम नहीं,अपना असर सब को दिखाता है।

हकिकत से न मुकर वक्त बर्बाद करनेवाला अपनी जिंदगी तबाह कर जाता है।

सदुपयोग वक्त का तन्दुरूस्ती कामयाबी इज्जत तरक्की देकर जाता है।

बेपनाह मुहब्बत है‌ क़ायेनात से उसे,रब की अपनी ये मिल्कियत है।

फ़िक्र किसी बात की नहीं है किसी मख्लुक को,बेखबर तु उस की जात से है।

इन्तज़ार नहीं करता किसी की मिन्नतों का,फ़ैसला हक़ में पलभर में करता है।

इशारा दे गये पीर फकीर पैग़म्बर, याद कर क्या वही काम तु करता है।

जिंदगी कभी मधुर हवा का झोंका कभी तुफान झलझला भी है।

सिलसिला ये कुछ पलों का जिंदगी को तहस नहस भी करता है।

वक्त ही सिकंदर है पल पल की खबर रखकर भी खामोशी से रहता है।

किस बात का गुरुर हालात बदलने पर इन्सान कुछ नहीं कर सकता है।

उम्मीद पर दुनिया कायम है फिर भीआज में जीलो यारों कल का क्या भरोसा।

सोचा कुछ,होता कुछ और है प्यारो कलयुग में किस पे करोंगे भरोसा।

जान है तो जहान है,कैसे करें आंखमुंद कर हम सब पर भरोसा।

मजबूरी बड़ी मोहताजी है शुक अदाकर,न कर अल्लाह ईश्वर के सिवा किसी पर भरोसा।

दिल में जो बसे बादशाह उसे बनाना ताज का हक्कदार वहीं होता है।

कतार में बोहोत खडे हैं मुखोटा हमदर्दी का पहने हुए मक्कार वहीं होता है।

वादे लाख करें कोई, हमारे लिए कुछ कर दिखाये हमारा वहीं होता है।

अब न समझोंगे तो कब समझोगे,सच्चा हमदर्द दिल में होता वहीं होता है।

सुख दुःख सब ले जाता है वक्त सूनेरी यादों को संजोए रखना।

जिंदगी जागते हुए भी सपने दिखाती है जज़्बातों पर काबू रखना।

भेडिये रुप बदलकर घुम रहे है होशियार----

साधु और शैतान मे फ़र्क समझने की काबिलियत रखना।

करतुतों से माहोल बदल जाता है,वक्त अच्छा बुरा नहीं होता।

मुश्किल परेशानियों का सब्र से बेहतर कोई मरहम नहीं होता।

कोशिशें तक़दीर बदलती है, सुस्ती से मसला हल नहीं होता।

अच्छी सोच साफ निय्यत रखने वालो का बुरा कभी नहीं होता।

इन्तजार में गर है कोई पलभर के प्यार के,मौका न गंवा जारिया ए सवाब का।

तसल्ली के लिए ही सही इकरार करले,सवाल है किसी के जीने मरने का।

सुना है सदका खैरात करते हैं कई लोग जन्नत पाने के लिए..…...

सहारा बन जा किसी जरुरतमंद का मकसद पुरा हो जायेगा जिंदगी जीने का।

इबादत का फलआखिरी में,मोहब्बत का दुनिया में मीलेंगा।

जीले प्यार मोहब्बत से सुकुन और चैन दुनिया में मीलेंगा।

दिवाली दिलवालो की है बांटले जो बांट सकें तुझे दुगना मीलेंगा।

ज़िंदा रहने की कोई वजह नही मरते दम तक ये पता नही इससे बढ़कर सज़ा नहीं।

मोहब्बत अक्ल दौलत इस्तेमाल का इल्म नहीं इस मर्ज की कोई दवा नहीं।

इस नये साल में सब खुश रहो आबाद रहो इस बढ़कर कोई दुआ नहीं।

बड़े सस्ते बिग गये हर कोई यार,लॉकडाऊन में बंद जो थे बाजार।

करें तो करें क्या चलाना था इस मेंहगाई में भी सब को घर संसार।

सब्र का फल मीठा होता भुलगये सब,यही है क़यामत के आसार।

दिमाग से काम लो,बेकार है जात धर्म के सहारे जले जो कारोबार।

बेवकुफों से दुरी ही बेहतर है चाहे अपने हो या पराये।

मतलबपरस्ती का शिकार ये सब लगते हैं इन्हें पराये।

सावधानी समझदारी है जीना है गर सुकुन से प्यारे।

अक्लमंदी यही है खुद की जिंदगी खुद ही संवारे।

खुशनसीब समझ करते हैं तुझ से मुहब्बत सब,तकब्बुर सर पे सवार न कर।

मोहब्बत में तेरी होगये हैं जो अंधे,मोहब्बत न सही उनपे रहम कर।

महंगाई बिमारी परेशानियों की सोचकर,भाईयों बहनों से आगे भी कुछ कर।

न भुल सिकंदर को भी खाली हाथ जाना पड़ा जो भी कर उपर वाले से डर के कर।

कलयुग है कोई मसीहा नहीं आने वाला,अब खुद ही संभल जाने की कोशिश कर।

नाउम्मीद करते हैं सब उम्मीद जीने से बंधी थी,फरेबीयों के वादों पर एतबार न कर।

माना के खरीदारों से चलती दुकानदारी,सस्ता बिकने वालों को अपना नुमाइंदा न कर।

इमानदार करतबगार बोहोत है देश में,चीकनी चुपड़ी बातें करनेवालों पर ख़ुदको निछावर न कर।

बेवकुफी और कायरता को समझदारी समझकर परेशान होना कमजोरी है।

अब तक न सुना कभी जमाना क्या कहता,उसी के खौफ से जीना मजबूरी है।

खुद के सवाल का खुद ही जवाब देकर ज़ुल्म सहना खुद से ही मक्कारी है।

ज़ुल्म न करो न सहा करो, ज़ुल्म के खिलाफ लड़ना जरुरी है ज़ुल्म सहना बिमारी है।

बदलती है जब तक़दीर मुफलिस को तवंगर,तवंगर को मुफलिस बनाती है।

याद रहे दुनिया मे ही होता है फैसला,रूस्तम को भी बिमार लाचार तक़दीर बनाती है।

दरबार में उपर वाले के देर है अंधेर‌‌ नहीं वहीं एक ताकत है जो बिगड़ी किस्मत बनाती है।

सज़दा उसे करने में देर करने वालो को दुनिया बेरहमी से अपने कदमों में झुकाती है।

अपने कर्मो की याद आती है जब रुलाती है दुनिया।

सहारा न देता कोई अतीत याद दिलाती है दुनिया।

जीस की लाठी उसकी भैंस यही समझाती है दुनिया।

समझदार को इशारा काफी वरना जिंदगी तमाशा बनाती है दुनिया।

जी़ल्लत से बचजाए ऐसी राह पे लेजाए जिंदगी यही खुशनसीब होंगी।

सबकुछ दांव पर लगा कर खुशहाली न मीले जरुर हम में कोई कमी होगी।

समय बड़ा बलवान है किसी ने कहावत आज़मा कर ही कहीं होगी।

दिल में हो प्यार लहज़े में नरमी,मोहब्बत करने वालो की कमी नहीं होगी।

छोड़कर इन्सानियत मज़हब का ठेकेदार बनना दस्तुर होगया।

शैतानी फितरत वाला कोई हिन्दू और कोई मुसलमान होगया।

बादशाहत की दौड़ में अब‌ बेगैरत कमीना भी‌ शामिल होगया।

गाफिल है सब इस हकीकत से ऐसा सुस्त आज इन्सान हो गया।

जिंदगी के आखिरी पड़ाव को शान से‌ जीना जिन्दा दिली है मुर्दे की तरह क्या जीया करते हो।

शुरुआत है ये नई जिंदगी की खाली हाथ तो‌ जाना है ‌फिर किस बात से डरते हो।

जिम्मेदारीयां कभी ख़त्म नहीं होती क्यूं वक्त से पहले मरने की सोचते हो।

‌जीलो शान से पता नही कब अंधेरा हो‌ जाये जीने में क्यूं गंजुसी करते हो।

जीले जिंदगी शान से माहौल को खुद पहचान ले।

मज़ा लेना है जीने का तो औकात खुद की जानले।

सब कुछ तेरे बस में नहीं है कुछ औरों की भी मान ले।

मगरुरी मे हद से आगे न निकल जमाने की रफ्तार जानले ।

लुत्फ उठा जिंदगी का परेशान न हो न कर,मज़ा आयेगा जीने का।

चलती फिरती लाश बनकर रह जाते,मकसद न समझते जो जीने का।

बोहोत कुछ होता करने के लिए पर नज़र नहीं आता और वक्त आता मरने का।

एक सांस न मीलती है यहां ज्यादा पर इरादा है जीने के लिए सबकुछ करने का।

सोच बतादेती है किरदार लाख छुपालो अस्लीयत।

मासुमियत का नाटक खत्म हो जाता,दिखती है जब खसलत।

जमाने ने बदले कई दस्तूर बंदलती नहीं इन्सान की फितरत।

मोहब्बत नाकाम होती‌ मतलब परसरत बसाता है दिल में नफ़रत।

लाख कोशिश करे राज़ेदिल बयां कर देती है जुबां गर काबू में न हो।

हकीकत यही है बदनाम शराब होती‌ है इन्सान बदनाम हो न हो।

वक्त का मारा कोई भी हो सकता है हालात इन्सान के बुरे हो न हो।

संभल कर चलना ही बेहतर है ठोकर जिंदगी में खाई हो न हो।

वोहत कुछ सिखाती है दुनिया होश में रहना जरूरी है।

मदहोशी मज़ा देती है पर औकात अपनी याद रखना जरूरी है।

मोहब्बत का असर कम होता रिश्तों के आगे याद रखना जरूरी है।

सच्चाई यही है इसे भुलजाना बेवकूफी मगरूरी है।

बर्ताव से जीते दिल आसानी से थोड़े नहीं जाते जुबां से किये वादे अक्सर तुट जाते हैं।

जुबां फिर भी हावी रही है अक्सर,ज़ुबां के सहारे झुठे भी अब बादशाहत पा जाते हैं।

कूछ ही वक्त का खेल है सबकुछ कुदरत की लाठी में आवाज़ नहीं होती सबक सबको सिखाये जाते है।

सच और हकीकत यही है सब का निगेहबान खुदा है यारो।

हमदर्द चाहनेवाले होंगे बोहोत पर सच्चाई से न मुकरना प्यारो।

खाली हाथ आकर खाली हाथ ही जाना है भुल न जाना दुलारो।

शानोशौकत जहांनुम न लेजाए इस बात का ख्याल रखना प्यारो।

अपनो परायो की गिनती प्यारों वक्त ही बताता है।

आता है ज़रुर वह वक्त,पर ये राज़ वक्त ही जानता है।

राज़ दिल में छुपाते हैं आपने तमाशा गैर बनाता है।

पहचान दोस्ती की होती है परेशानी में इन्सान जब आता है।

सब कुछ पाकर तन्दुरूस्ती न मीले बेकार है सब।

खरीदी न जाती तन्दुरूस्ती खुद को संभालना है बस।

इच्छावों पर काबू और लालच से बचना है बस।

तन्दुरूस्ती गंवाकर कमाना उसी के लिए गंवाना बेकार है सब।

जीतोगें हर बाज़ी गर हो तुम से रब राज़ी।

न दौलत देंगी कामयाबी न ताक़त से होगा रब राज़ी।

बादशाहत से भी न जीती जाती है जिंदगी की बाज़ी।

सुकुने जिंदगी,तन्दुरूस्ती आता होगी जब हो रब राज़ी।

आसान है ज़िंदगी समझौता जरुरत पे करना ही अक्लमंदी समझदारी है।

बेवकुफी मगरुरी मुसीबत का सबब न बन जाए आपस मे रजामंदी जरुरी है।

अकेले खुशहाल जिंदगी का मज़ा न लें पांवोंगे हमदर्द रिश्ते और दोस्त जरुरी है।

वक्त आगे बढ़ता है ज़िंदगी को कम करते हुए वक्त कि नजाकत समझना जरूरी है।

मुसलमान वहीं,मुसल्लम जिस का ईमान है जात और धर्म की इस से कोई ताल्लुकात नहीं।

हिन्दू वहीं,उच्च सभ्यता संस्कृति के नगर हिन्दुस्तान का वासी नफ़रत जहां पनपती नहीं।

सदियों कि इस लड़ाई का कोई मक़सद नहीं अपने ही खुन से लड़कर सुकुन नहीं।

मज़हब सारे जीयो और जीने दो ही सिखाते हैं अपने ही मज़हब की बात हम समझते नहीं।

वक्त ही बनाता है सितम्बगर दोस्त को,लिहाज़ करना सीखले।

चिकनी चुपड़ी बातों में कुछ न रक्खा है तहजीब मे रहना सीखले।

कुदरत की नियामत है ज़िंदगी दोस्त,अहसास करना सीखले।

तेरा मेरा कुछ भी नहीं है यहां सुकुन से गुजरे जिंदगी वो हुनर सीखले।

आग लगे बस्ती में हम हमारे मस्ती मे ये सबक है आज के माहौल का।

समझ न पा रहे हैं हम क्या चल रहा है और क्या होगा हमारे देश का।

भरोसा करें तो किस पर बाल न बांका हुआ खाकर चले गये कई माल देश का।

सोने की चिड़िया थी देश मेरा पराये तो लुट गयेअब अपने ही लुट रहे माल देश का।

नेकी कर दरिया में डाल दुनिया में अज़ल का इंतजार न कर।

माहोल ख़राब करने कमीनें इन्तज़ार में है,सब्र से काम लें जल्दबाजी न कर।

लौट के ज़रुर मीलता है कर्म का फ़ल देनेवाले पर‌‌ एतबार कर या न कर।

जब मीले मौका नेकी कर दुनिया तो फानी है वक्त ज़ाया न कर।

जीले जीभर के बनाये रखना अपनी शान पर याद रख जहां में है तु मेहमान।

कर्म कर ऐसे रुठ जाए शैतान दुनिया वाले न भुले तेरी पहचान।

सच है ये जान है तो जहांन है पर जीने के लिए न बनना हैवान।

परेशानी से न डर जमाने से होकर रुसवा न भुल कीमती है तेरी जान।

\*

कई रुप से होती है जिस की पहचान,एक ही है अल्लाह ईश्वर भगवान।

मांता पिता गुरु की दुआओ में रहे उस से बढ़कर न कोई धनवान।

धन दौलत शौहरत तो आती जाती रहेंगी प्यारो-----

इज्ज़त,तन्दुरूस्ती सलामत‌ जिसकी वहीं दुनिया में बड़ा बलवान।

दिल की हालत दिल लगाने वाले से बतायी नहीं जाती।

दिमाग से दिल की गहराई कभी नापी नहीं जाती।

मोहब्बत जतायी जाती है अक्सर बतायी नहीं जाती।

दिखावे वाली मोहब्बत कभी निभाई नहीं जाती।

जीतेजी तय्यारी कर आखिरी सफर की न जाने कब बुलावा आजाए।

कोशिश कर इबादत और बर्ताव से लोगों कि दुआओ में जगह मिलजाए।

जीने का हक़ सब को है जीने की कशमकश मे इन्सानियत कहीं खो न जाए।

सपनों के साथ अपनों की भी फ़िक्र कर कहीं मौका हात से निकल न जाए।

चंद दिनों का साथ होता है तुम्हारा हमारा,कोशिश खुश रहने की हो।

न जमाना ख़राब है न जमाने वाले,कोशिश करें माहौल ख़राब न हो।

कब क्या होगा किसे खबर नहीं,अपनी तरफ से कोई मुश्किल खड़ी न हो।

जीना मरना लगा रहेगा,जीने के लिए खींचातानी हायमारी न हो।

इस से पहले की कुदरत सब कुछ छीन ले प्यार से जी लिजीये।

आखिरी दांव ऊपरवाला ही जीतता है चाहे जो भी कुछ कीजीये।

याद रहे प्यारों कफ़न में जेब‌ नही होती है -----

प्यार मोहब्बत धन दौलत बांट कर जीना सिख‌ लीजीये।

नाक कान पर काबू पाना नामुमकिन है,ज़बां पर काबु सेहतमंदी का राज़ है।

कुदरत की असीम नियामत है ज़िंदगी समझना अक्लमंदी की बात है।

जीते हैं कीड़े मकोड़े जानवर भी, इन्सानियत से जीना मुश्किल बात है।

लेकर जाना कुछ भी नही सब को पता है कूबुल इस बात को करना मुश्किल बात है।

हमदर्दी जरूरी है पर जल्दबाजी न करना।

समझदारी,तसल्ली से दिल पे काबू रखना।

सूकुने दिल की चाहत में बेवकुफी न करना।

बेवकुफों को गले लगाने की हिक्मत न करना।

गुल गुलशन आबाद होंगे गर बेहतर आबोहवा और जमीं पर बसे होंगे।

जिंदगी की यही कहानी है खुशहाली तन्दुरूस्ती तभी साथ होंगे।

माना कीचड़ में कमल खिलते हैं और भगवान के चरणों में चढ़ते हैं।

ऐसा भी मुमकिन है दुनिया में मेहनती ईमानदार हो तो खुश नसीब होंगे।

ताहरुफ के मोहताज न होंगे जिंदगी सुकुन से जी रहे होंगे वो जो अच्छे इन्सान होंगे।

इन्सानियत जातपात धर्म पर निर्भर नहीं,इन्सानियत के रास्ते पर‌ चलकर खुशहाल होंगे।

कुर्सी का चक्कर है सबकुछ इन्सानियत दांव पर लगाकर जीतते है यह सब जानते होंगे।

जज़्बातों पर काबू रखने वाले बहकावे में नहीं आते यह याद रखने वाले हर दम खुशहाल होंगे।

मुक्मल ईमान सुकुने दिलोदिमाग, बदले सोच हर किसी की दुआ में शामिल हो जाए।

बचना है शैतान के चंगुल से तन्दुरूस्ती सलामत और‌ हर मुश्किल आसान हो जाए।

हर मज़हब जीयो और जीने दो ही सिखाता है मज़हब के ठेकेदारों के बहकावे से बचा जाए।

वक्त बदलता रहता है लोग भी बदलते हैं कर्म ऐसे हो हर वक्त तुम्हें याद किया जाए।

किसी की सब्र का इम्तिहान न लो बाज़ी पलटने देर नहीं लगती।

जिसकी लाठी उसी की भैंस कहावत ये पुरानी अब सच लगती।

बादशाहत छीन जाती जिनकी नई हुकुमत उन्हें दुश्मन ही लगती।

फ़िक्र छोड़ो रब‌ के हवाले होकर देखो दुनिया कितनी हसीन लगती।

तन्दुरूस्ती हजार नियामत है संभालना अपने हात है।

खौ़फेखु़दा गर दिन-रात है डरने की क्या बात है।

हक-हलाल जिंदगी उम्र भर साथ रहे अच्छी बात है।

याद रहे इंसानियत के बाद ही हर मज़हबी बात है।

हमदर्दीऔर प्यार है सुकुन से जीने का सीधा रास्ता।

लोग करते हैं गुन्हा,देते हैं अल्लाह ईश्वर का वास्ता।

छोड़कर सीधा रास्ता पसंद करते हैं जहान्नूम का रास्ता।

आंख खुली तब सबेरा चुनये जीयो और जीने दो का रास्ता।

मायुस न हो जिंदगी से कुदरत ने दिई है ये अनमोल नियामत।

ग़ाफ़िल न रहना असलियत से आखिर में समझेगी इसकी कीमत।

माज़ुरी, बीमारी, कमजोरी हमे समझाती है इस की अहमियत।

दुनियादारी के चक्कर मे भुल न जाना ऊपर वाले की ताक़त।

जानो माल का सदका आदा हो रहमत बरसने देर नहीं लगती।

हक्कदार तक पहुंचें मदत दिखावे से रोजी में बरकत नहीं मिलती।

सब कुछ दुनिया में मिलकर भी बगैर आजमाईश जन्नत नहीं मिलती।

कुदरत की लाठी में आवाज़ नहीं होती सबकुछ होकर भी सुकुन की नींद नहीं मिलती।

 जिंदा है इस बात का सुबुत दे,

मुर्दे की तरह क्यु जिया करते।

मोहब्बत से हक अदा कर,

इन्सान खुन पीकर नही जीया करते।

कितने है मेरे हमदर्द दोस्त और चाहने वाले जीतेजी ये पता तो चले।

मरने के बाद तारीफ करने वाले और माफ करने वाले बोहत देखे है।

दावत इन्सानियत को बरकरार रखने की दे रहा हुॅ किसी मज़हब का तौहार न समझो।

इन्सानियत से बढकर कोई मज़हब नही श्री ऊमकारेश्वर साई मंदिर आकर तुम यह समजो।

बडजाता है प्यार बेशुमार यहॉ पैसा बडजाने पर..... नये नये मिलते है यार भनक पैसो की लगजाने पर..... कोई शक नही आज भी है दोस्त सुधामा जैसे........... दिखावा नही करते जो काम वही आते है वक्त आनेपर....,...

सब्रोसुकून आता हो जाए दुआ ऐसी खुदा से कर।.

लाइलाज मर्ज की दवा ये तू सजदा खूदा को कर।. हर सितमगर का हीसाब होंगा इन्तेजार थोडा और कर।

मुकद्दर का लिखा चलकर आयेंगा रब पे ऐतबार कर।.

बड़ी मुश्किल से मिलते हैं दोस्त दोस्ती निभाने वाले। ऐसे तो बहुत मिलते हैं खा खुजा के बत्ती बुझाने वाले।.

गद्दारों से न कर उम्मीद वो तो होते हैं मुंह फेर के जाने वाले। सच्चे यार ही होते हैं यार को बगैर मतलब दिल में बैठाने वाले ।.

अपने अपने फन में माहिर है हर इंसान । खुद के लिए जीता है वह बनकर हैवान ।. बेरहमी से लेता है वह आज अपनों की ही जान।. मिट जाएगी खुद की हस्ती बाकी न बचेंगी शान।

इसी बात से कमबख्त बेखबर बैठा है आज इंसान।.

समय समय की बात है पैसा कभी दुर कभी पास है। दुर है पैसा फिर भी धनवान है गर तन्दुरस्ती पास है।

साथ हो यारो का तो कंगाली भी लुत्फ देती है। कंगाल होकर धनवान है सच्चे यार जीसके पास है।.

मगरूरी की मीयाद खत्म होजाती है तन्दुरस्ती के साथ।. जीना पड़ता है फिर मगरुर को लाचारी मोहताजी के साथ।. मोहब्बत इखलास दुगने होते रहेंगे दोस्तो बांटने के बाद।. सदा रहता है दिलों में जीता है जो मोहब्बत इखलास के साथ।.

तय्यारी सुख चैन हासील करने की शुरु होजाती है हमारी बचपन से।. सुख मीलजाता चैन नहीं मिलता आगे निकल जाती उम्र पचपन से।

दुख का अहसास नही औरों के बटोरने मश्गूल इंसा खुशियां लालचीपन से।

गाफिल रब से जीन्दगी भर रहकर चैन की उम्मीद रखता है आखिर मे उसी से।

आसां है मोहब्बत से जीना एक ही मुस्कुराहट से पीघलता है इन्सान कमीना।

दिखेंगी मुस्कान लबोपर दिल में होगा प्यार नफरत से भरा न होंगा सिना।

मुश्किलें खुद ही हल करनी पड़ती है आता नही है कोई यार रिश्तेदार नया पुराना।

दुख किस बात का करना मुस्कुरा कर जीना मुस्कुराते मुस्कुराते चले जाना।

बीते दिनो से लिए सबक दोस्तो जरुर याद रखना गिले-शिकवे न रखना।.

गलतीयां हर एक से होती है परेशानी बढ़ादे ऐसी हरकतों को अब दुर रखना।

दिल न दुखाये कीसी का ऐसी बदमाशीयों को कायम रखना।.

जो होना था हो गया कामयाबी की उम्मीद रखनेवालों मेहनत ईमानदारी साथ रखना।.

साल नया आयेगा खुशीयां हमारी साथ लाएगा।. उम्मीदे सब की जगायेंगा रास्ते नये दिखाएंगा।.

इसी खुशी में सब को 31 की सांरी रात जगाएंगा।. हर कोई टुन होकर ये कहेंगा जो होंगा देखा जाएंगा।.

\*Happy new year\*

दिल को बहलाने तकदीर का बहाना अच्छा है।. दुःखो को भुलजाने तकदीर का बहाना अच्छा है।.

अच्छे बुरे की पहचान दोस्तो वक्त जरुर कराता है।. कठिन सफर है जिंदगी का संभलकर चलो तो अच्छा है।.

भ्रम तुट जाता है वक्त बुरा शुरु हो जाने पर।.

आंखें खुल जाती है मुश्किल में पडजाने पर।.

मगरुर न बन शान-शौकत के गुमान में....कुछ न काम आता इबादत के सिवा आंखें बंद होजाने पर।.

उम्मीद किसी से न रख रब के सिवा हरदम खुशहाल रहोगे।. देता जा जितना भी दे सके लेने की उम्मीद से दुखी रहोगे। अपना हो या पराया बदल जायेगा यकायक तुम देखते ही रहोगे।. कर्म हो नेक फिर क्या घबराना सखावती हो तो सखावती ही रहोगे।

बन न सके गर तुम अच्छे इन्सान लडते ही रहोंगे बनकर हिंदू मुसलमान। बदल न सके सोच अब अपनी रहोगे बेवकूफ मजबुर बनकर परेशान ।

तमाशा न बनजाए जिंदगी वक्त पर छुटजाए झुठा अंहकार अभिमान।

लडा लडाकर आपस मे लुट रही है दुनिया सदयों से हमे बनाकर हैवान।

अब होश न खोना देशवासियों बलवान हो रहा है हमारा हिन्दुस्तान।.

है इन्सां अब भी जिंदा इस जमाने में न ढुंड उसे मंदिर मस्जिद बुदखाने मे।.

झांक अपने अंदर कमबख्त दबोच रक्खा है अहंकार नफरतने उसे तेरे ही सिने मे।.

जज्बा न हो मुल्क का दिलमे अपने ही घर मे वो पराये है ।. जात धर्म के नाम पेट भरनेवाले हाजीर आज हर चौराहे है।. तरक्की देश की दरकिनारे है गलीगली गुजते नफरत के नारे है। न लडो आपसमे देसवासीयो हम तुम्हारे तुम हमारे है।.

मोहब्बत हर दिल मे होती है दिलेरी मोहब्बत करने की किसी किसी मे होती है।

मोहब्बत पानेकी उम्मीद सबको है मोहब्बत देने की तमन्ना किसी किसी मे होती है।.

अजब कारीगरी है दुनिया बनाने वाले की.... इन्सान बोहत बनाता है वो पर इन्सानियत किसी किसी को नसीब होती है।

साधगी,समझदारी,नम्रता,प्रेम गहने है इन्सान के।

दया करुणा कृपा ये सब गुण है भगवान के।

सजेंगा इन गहनो से जो गुण आयेंगे भगवान के।

मक्कार अहंकारी जीयेंगे गुण लेकर शैतान के।

सब्र करो देशवासीयो बदलेंगे नसीब देश को बदलने तो दो। मसीहा न समझो उसे तो कोई बात नही पर कुछ करने तो दो। लुटसे भरे पडे है खजाने जीनके खाली उसे करने तो दो। बहोत कुछ बदला है दो सालो मे पांच साल पुरे करने तो दो। लुटकर सोने की चिडया फिरंगी फितने फैलाकर चलागा । साठ सलो मे किसीने न कहा nafratki आग को थंठी तो होने दो। आतंगवाद रिश्वतखोरी गरीबी की लगी है हमे बीमारी। काबील हाकिम मीला है हमे सुकुन से उसे इलाज तो करने दो। बेगुन्हेा किसानो और जवानो को इस बिमारी से मरने न दो। सब्र करो देशवासीयो बदलेंगे नसीब देश को बदलने तो दो। मसीहा न समझो उसे तो कोई बात नही पर कुछ करने तो दो। \*आशफाक खोपेकर\*

पोहच न पाये गर तु उस उँचाई पर रश्क न कर पोहचे हुये को देखकर । वक्त का खेल है सब किसे नवाज़ता है तो किसे फेंकता है उखाडकर। औरों की खुशयों मे खुश होने का मज़ा ही कुछ अलग है । नाउम्मीद न हो कोशिश जारी रहे देगा तुझे भी वही एक दिन छप्पर फाडकर।

कम लगेगी दौलत चाहे जीतनी भी कमाई जाये। थोडी सी जरुरत बाकी शान दिखाने के काम आये।

रिश्ते कमजोर होते है वक्त के साथ साथ.... दोस्ती की दौलत ही दुनिया मे जीने के काम आये।

मुश्किल हो डगर लम्बा हो सफर हीम्मत है तो डरने की जरुरत क्या है। चलती है गाडी जब अपनी ही रफतार से उसे धकेलने की जरूरत क्या है। स्वीझ बँको मे छुपे सांपो को बाहर निकालना मोदीसरकार का मक्सद है । वरना समाज मे छुपे छोटे छोटे सपोलो को दबोचने की जरूरत क्या है।

हंगामा होजाए ऐसी कोई बात नही शामत तो सिर्फ टँक्स चोरो की आगयी। गरीब को जरुर मीलेंगी उसकी कमाई अक्ल तो सुतखोरे की ठिकाने आगयी।. हमदर्दी गरीबो से उनको होगयी सरकार की नजर जीनके खजाने पर आगयी। बहकाते फिरेंगे सारे दुश्मन हमारे जीनके दिलोमे न थी कभी देश की भलायी।. समझदार को इशारा काफी भले मानस ने हमारे लिए जान दांवपर लगायी।.

जाग गयी है जनता अब तुम बेवकुफ बनाना छोड दो।. लुट लुटकर होश मे आये हम अब राहसे भटकाना छोड दो।. हिन्दुस्तानी है हम हिन्दु मुस्लिम मे बाँट कर लडाना छोड दो।.

अच्छे बूरे की पहचान होगयी अब हम को सिखाना छेाड दो। कर न सके जो तुम साठ सालोमे,करता है कोई उसे सताना छोड दो।

बची हुयी है थोडी पुरखों की इज्जत तुम उसे लुटाना छोड दो।.

# \*आज का माहोल\*.

बेकार परेशान हो रहे है आज वो जो पहले ही है परेशान।. कई दिनो से देखी नही नोट हजार की वो है ज्यादा परेशान । कहते थे जहर खाने नही है पैसे बँकों की कतार मे अब है वो परेशा। खुश है कर्जदार वसुली को अब आते नही है साहुकार।.

पुराने नोटो मे कर्ज देने को आज है हर कोई तयार। हमदर्दी ईमान्दारी बडगयी पुरनी नोटो मे बकाया देने है हर कोई तयार।. दमडी नही है जीनके खाते मे बैठे है ३०%पर नोट बदलने तयार।. वाह रे मोदी सुकुन की सांस लेरहा है गरीब हर कालेधन वाला होगया है परेशान।.

: भुचाल अजबसा आया गीरा न कोई गरीब अमीर न संभल पाया।. लाख बहकाया मक्कारो ने लोगो पर कुछ असर न हो पाया। बचा न कुछ करने को उनसे भवनो मे मोदी ने तांडव करवाया।. मजबुर कालाबाजारी बेचारा पुजा करके लक्ष्मी गंगामे बाहा आया।.

तमन्ना दिल मे सलामती की ना हो तो सलाम करना फिजूल है। मोहब्बत के बहाने मतलबी बनजाना इन्सान की बडी भुल है।. सांसो के बगैर लाश है इन्सां फिर कैसा ये गुरुर है। पाक नही है रुह तो सजना संवरना सब फिजूल है।.

सदीयों से होता रहा है ज़ालीमो का मजलुमो पर जुल्म।.

रब ही सहारा है मज़लुमो का ईश्वर रखता है सब इल्म।. घडा पाप का भरनेतक रोकता नही वो करने से जुल्म।. पैदा करता जरिया ऐसा न रहता ज़ालीम न होता जुल्म।.

नाझ नखरे तेरे सब उठायेंगे बचपन मे जासके तो जा।‌बेफिक्र था तु जैसे उस जमाने मे फिर न होसकेंगा ।.

हर खता माफ थी, उस गोदी मे मॉ के जासके तो जा।.

सब मुम्कीन है गुजरा पल लौटकर नही आसकेंगा। जारिया ए सवाब कोई बनाकर तु जासके तो जा।

नफरत से दिल को पत्थर बनाकर तडपकर ही जीना पडता ।.

सिने मे इस लाइलाज मर्ज को पालकर जीना बडा मेहेंगा पडता ।. मोहब्बत को दिल मे बसाकर इन्सां मुश्किल मे नही पडता ।. सुकुन ही सुकुन मीलता है जिन्दगी मे शैतानी चक्कर मे वो नही पडता ।

बचपन करे नादानी जवानी होती मस्तानी ऐसा कुछ कर बन्दे बुढापा न लगे परेशानी। जानकर भी दुनिया फानी है करनी पढती है यहॉ अपनो से भी कभी कभी बेइमानी।. मग्फीरत की उम्मीद गर दिल मे है बन्दे तो करनी पडेंगी बंद तुझे सारी मनमानी। खुद ही के हातों लिख तु अपनी कहानी जाते जाते छोडजाना तु कुछ अच्छी निशानी।.

: अंजामे मोहब्बत की फिक्र न होती थी कभी मोहब्बत करने के पहले।. अब मेहबुबा इझहार इकरार ही नही करती बँक बँलेस देखने से पहले। किराये की गाडी बंगले के चक्कर मे फंस जाती थी लडकियॉ पहले।. बेडा गर्क हो तरक्की का अब ऑनलाइन चेक करती सबकुछ मीलने से पहले।.

फक्र इन्सानियत खोकर ही हासील करना पडया है।

बडा मेंहगा सौदा है इन्सान कों जानवर बनना पडता है।. शुक्र इन्सान होने का करो जानवरों को देखो कैसा जीना पडता है।

फक्र मजहबपर करनेवालो को इन्सानियत छोडना पडता है।

बैदावार गंन्दगी की दिमाग मे न होंगी दिल मे बूराई न हो। वक्त अच्छा बुरा कट ही जाएंगा कोई साथ हो न हो ।

बन्दीश नही होती है दिलो दिमाग पर जुबां पर लगाम हो न हो । सुख चैन की जिन्दगी अता होंगी दिलो दिमाग मे बुराई बसी न हो ।

तजरुबे को बांटकर औरों का वक्त बचाया जाए ।. सारे रास्ते है वक्त बरबाद करने के सिर्फ इसी से वक्त बचाया जाए ।.

दौलत के ढेरो से भी एक पल न खरीदा जा सकता। अनमोल चीज है वक्त इसे सोच समझकर इस्तमाल किया जाए।.

कुर्बानीयो से ही टल जाती है मुसीबते।

कुरबानीयो से हीे हासील होती है नियामते।.

कुछ खोकर ही कुछ मीलता है यहॉ यारो।

नाकारों पर मेहरबान कुदरत भी नही होती ।.

नफरत के बीज पिरोकर शौहरत दौलत हासील करते है आज ।.

खिलवाड मजहबो से करने वालो को ही पहनाया जाता है ताज।. खौफेखुदा को भुलकर मौज मस्ती मे मश्गुल है आज सारे दगाबाज।.

जियो जीने दो सबक सब को मीलता है कुदरत के लाठी मे होती नही आवाज ।.

इम्तेहान नही होते दोस्ती मे जब दो जिस्म एक जान होते है दोस्ती मे।. कुर्बानीयो का जज्बा निखर आता है सच्ची दोस्ती मे।. कमजोर पडजाते है रिश्ते फिर भी जिन्दगी बीतजाती है दोस्ती मे।.

लुत्फ जरुर उठाना कुदरत की इस अन्मोल नियामत का।. सुकुनो चैन अता होता है दिल को दोस्ती मेे।

चलाकी ख्होश्यारी का इस्तमाल वक्तपर हो तो तरक्की मे रुकावट न होंगी।. इमानदारी का साथ गर हो तो मुश्किले आकर भी तक्लीफ न होंगी। वक्त का इन्तज़ार करना बेवकूफी की निशानी है दोस्तो। मेहनत मुशक्कत तुरंत शुरु होजाए तो कामयाबी दुर कभी न होगी।.

रंगो मे छुपा है होली के प्यार बेशुमार। मीलता है हमे ये मौका साल में एकबार।. न करना प्यार लेने देने से तुम इनकार।.

गिले-शिकवे मीटाने आया है होली का त्यौहार।

थकान महसूस न होगी जिंदगी के सफर की हमराज़ हमसफ़र गर साथ है।

आसान होगा मुश्किलो से निकलना गर‌सब्रr और हिम्मत साथ है।

न जमाना ख़राब होहोता है ‌न वक्त ख़राब होता है।

इन्सान की हरकतों से उस का नसीब ख़राब होता है। ...

जख्मो को सहलाने की उम्मीद न कर जख्मो को कुरेदने का आदी है ज़माना।

जज्बात बेहतर है सिने में छुपाना कद्र करने वालों का न रहा पता-ठिकाना।

रोनाधोना चुपचाप ही हो तो अच्छा दुखों मे शामील होना होगया रस्म पुराना।.

एक ही मन्तर चलता है आज जिसका भरा है खज़ाना उसीके पिछे जमाना।.

राहे तरक्की मे रोडे अक्सर आते है मंजिल पाने की उम्मीद न छोडी जाए।

बुलंद इरादो से हर काम मुम्कीन है कामयाबी की जिद्द न छोडी जाए।

चैनो अमन खत्म करदेंगी कामयाबी तक्कबुर से को़सो दुर रहा जाए।

लुत्फ कामयाबी का दुगना होगा हक्कदार का हक्क अदा किया जाए।

पोंहचाए नुकसान तन्दुरस्ती को सोच ना ऐसी बनाए रखना।

करदेंगी नुकसान आखिरत का हसद से दूरी बनाए रखना।

बरकती है मेहनत का मुआवज़ा उम्मीद उसीकी बनाए रखना।

हराम काम से बरबादी तय है हलाल रोजी की नियत रखना।

जिन्दगी का सफर पुरा करना ही पडेगा।.

आयें लाखो मुसीबत फिरभी चलना पडेगा।.

खाके ठोकर फिर से सभलना ही पडेगा।

सुख दुख का लेकर मज़ा मौत से मीलना पडेगा।.

परवान चडजांए जिन्दगी ऐसी रूस्वाई न हो!

बदनाम हो जाए मोहब्बत ऐसी कुरबानी न हो!

दिलों को ऐसा पाक कर ऐ खुदा बेमत्लब फसाद न हो।

दुनिया वालो से डर लगेगा गर हक्क अदा न किया होंगा! दौलत जान बचाने किराए के पहेरेदार लगाना होंगा!

डर लालच कम न हुयी तो हराम काम करना ही होंगा! न करआज का भरोसा कल की फिक्र होना जो होके रहेंगा।

टनटनाटन जेब मे जीसके खनके पैसा!

लागे वो दुनिया मे सबको भगवान जैसा!

जीते है बाकी सारे बेचारे जैसा वैसा!

हराम करदे जीना फिर भी सब की उम्मीद है पैसा!

खुद की कद्र नही करता इन्सान मुफ्त मे जो मीली है उसे जान!

झुटी शान गलत काम के चक्करमे गंवाता है खुद का सम्मान!

खरीदी हुयी छोटी सी चीज परभी अटकती है उस की जान!

न बचा है उस का इमान मश्गुल है पुरे करने अपने आरमान!

शराब भरी बोतल से नशे का अंदाज नही मीलता!

बगैर उतरे वो हलक से खुमार नही मीलता!

बहकते है पी कर कमजोर उन्हे महफील का मजा नही मीलता!

साखी से मिली नजरे तो महफील का गुमां नशे का अंदाज नहीं मिलया।

मेहनत मुश्कत इमान्दारी से मीली तरक्की लम्बा सफर तय करती है!

सखावत रहमदिली साथ हो तो सूकून तन्दुरस्ती हमेशा साथ रहतु है।

जलना जलाना फितरत है शमां की! परवान चडना आदत है परवाने की!

जल जलकर रात गुजरती है शमां की! उफ न करता शमां के आगोश मे जान निकलती जब परवाने की!

प्यार मीलना मुश्किल हो गया इस जमाने मे! जिन्दगी पुरी बीत जाती है कमाने खाने मे!

वक्त गुजर जाता है झूटी शान दिखाने मे! कोहराम मचा है देश मे नेता मश्गुल है लुट मचाने मे!

मरने मारने पर उतारु होता था मेहबुब गर मेहबुबा कीसी और के पहलू मे हो!

पी लेती थी मैहबुबा जहेर गर मेहबुब कीसीके बाहों मे हो!

कीस्से पुराने हो गये ये अब कोई नही दिखता ऐसा के किसी के इन्तजार मे हो !

भंवरा बनगया मेहबुब मेहबूबा उसी की होती है माल जीसके खजाने मे हो।

गमगीन होते वो जो औरो से उम्मीद रखते ! खुशहाल रहते वो जो अपनो से भी उम्मीद न रखते!

जरया कुदरत जरूर बनाता मुसीबत मे कीसे न कीसे! दुर होती हर मुशकिल उन की सिर्फ रब के भरोसे जो रहते!

समय बडा बलवान गधे को भी बनाता है पेहलवान! भला इन्सान भी बनता है लालच मे हैवान!

सबको है पता यहॉ सब है दो दिनो के महेमान! पलभर मे फिर भी यहॉ बदल जाता है इमान!

शौक से शुरु होती शराब फिर आदत बन ही जाती है !

कूछ वक्त परेशानी से तसल्ली दिला कर दुगना उसे बनाती है !

न संभले खुद तो तन्दुरस्तीखराब दुनिया जहान्नुम हो ही जाती है!

न हुआ भला कीसी का पीकर इसलिए हराम ये कहलाती है !

जरुरत है देश की सरहद मे हमदर्दी कर! देश से प्यार देशवासीयों से मोहब्बत कर!

हर धर्म यही सिखाता देश से गद्धारी न कर! अपने अपने धर्म की तरफदारी जरुर कर!

शांती से जी दुसरो को परेशाान तु न कर।

कीतना प्यारा है ये संसार यहॉ आता है हर कोई सिर्फ एक बार!

छोटी सी जिन्दगी जीते जीते तडपता रहता है बार बार!

पता हर एक को होता है जाना पडेंगा यहॉ से जरुर एकबार!

कर्म जीनके अच्छे मर कर भी याद कीये जाते वो बार बार।

नसीब के भरोसे वक्त जाया न हो! अझीम दौलत है वक्त सही इस्तमाल हो!

आती जाती रहती है सारी दौलते वक्त नही आता सेहत का ख्याल हो!

सोना चांदी हीरे मोती शान बडाने अच्छे है! रिश्ते नाते संगी साती प्यार जताने अच्छे है!

जीवन का क्या भरोसा जीतने मीले दिन सब अच्छे है! माफ करो गलती सब की अगर दिल के तुम सच्चे है!

योग साधना करने की संस्करुती है हिन्दुस्तान की!

नमाज मे ही दिखती है ये संस्करुती हिन्दुस्तान की!

बुरा न मानो दोस्तो हिन्दु तो हर हिन्दुस्तानी है पर गौर करो,

पांच वक्त जमींपर सजदा करने वाला शान है हिन्दुस्तान की!

हर चमकीली चीज हीरा नही होती! कांच के तुकडो की अहमीयत नही होती!

लाख छुपावो फित्रत खस्लत न छुपी रहती! नेक इन्सा की दुनिया मे तहजीब जरुर होती!

सब से अच्छा जग मे हिन्दुस्तां हमारा!

जय जवान जय किसान है नारा हमारा!

अनेकता मे एकता दिखाता देश हमारा!

आपस मे बैर रखना ये मजहब नही हमारा!

मकसद न हो जीने का तो वीरान है जिंन्दगी !

मंजील पोहचने की जिद्द न हो बेकार है जिन्दगी!

वक्त कम देती है अरमां पुरे करने को जिन्दगी!

समझदारी सुकुन हीम्मत से ही संवरती है जिन्दगी !

हालात ऐसे हो गये कलयूग मे मोहब्बत भी तीजारत की तरह करते!

खर्च बेटी की शादी मे ज्यादा पढाई पे कम करते!

हीफाजत करने वालो से ही आज हम डरते(पुलिस)!

आरक्शीत लोक मजा करते काबिल खाने को तरस्ते!

पॉन स्टार सेलिबरेटी है बलात्कार हुयी अबला की इज्जत नही करते!

जल्दी मे है हर कोई वक्त की कीमत कोई नही करते!

बुरे कर्मो का बुरा अंजाम वो जमाना चला गया!

सच्चाई इमान्दारी का नाम किताबो मे रह गया!

साजेदारी मे किये बुरे कर्म अब बुरे नही कहलाते!

लुटेरे बादशाह बन गये थे वक्त वही अब लौटकर आगया!

रूक जावो देश वासीयो और न लडो सोना उगलती है धरती हमारी!:

लुट लिया हमको दुनिया वालो ने फीर भी काबीलियत खत्म नही हुई हमारी!

देश की तरक्की काबीलियत लगन मेहनत पर निरभर है हमारी!

झुटा जेहाद मक्कारी फितनेगीरी मे न खत्म हो काबीलियत हमारी!

7 जन्म साथ रहे इस तमन्ना से सती जाती थी सत्ययूग की नारी!

साथ फेरों के चक्कर मे आज परेशान है कल्यूग की नारी!

मेहंगाई की बडी बीमारी से हतबल हो गयी है आज की नारी!

टेन्शन ज्यादा खाना कम खुद से ज्यादा बच्चो का ग़म इस मे खत्म होरही है बेचारी!

दास्तां अधुरी न रह जाए जिन्दगी के सफर की!

आखरी सांस तक उम्मीद न छुटे तरक्की की!

कोशीश जारी रहे मंजिल तक पोहचने की!

उम्मीद पर दुनिया कायम है जरुरत है हस कर जीने क

बेफिक्र आराम की जिन्दगी कुछ दिनो की थी!

न खानेपीने की जरुरत न सांस लेने की फिक्र थी!

न मील सकेंगी दोबारी ऐसी जिन्दगी चैैसी मॉ के कोख मे थी!

अच्छा सीला मीला मेरी खताओ का! दुल्हन की बीदाई मे रोरहे थे मंचले मोहल्ले के!

खुशी न थी मातम लगी शादी बद्दुआ थी मासुम हसीनाओ की!

हालात बत्तर होगये इन्साफ करने वालोंपर ऐतबार न रहा!

जीस की लाठी उसी की भैस सच्चाई का जमाना नही रहा!

बेगुन्हा गरीब बर्सो से जेल मे अमीरजादों को कानुन का डर भी न रहा!

सच्चाई के साथ जीना आसान नही कदम कदम पर झुट की जरुरत है!

कोशिश भी न करते आज कोई इमानदारी की बेईमानी की हरपल जरुरत है!

लबपे हो न हो दिल मे जरुर हो खौफे खुदा!

हर हाल मे खुशी न होंगे कभी रब से जुदा!

हर जर्रे पर निगाह है उस की होगा एक दिन तुमपर भी फिदा!

हर देशवासी है शान देश की ! सबका सात हो तो तरक्की देश की!

भुल न जाना जान हो तुम देश की!

नाइन्साफी न होने दो आन हो तुम देश की!

बाबु को बनाया बादशाह तो प्रजा काे दुखी होना होंगा!

अकलमंदी का नझारा दिखाया है तो अंजाम भुगतना ही होंगा!

इश्वर ही बचा सकता है वरना तडपकर ही जीना होंगा!

कुदरत की लाठी मे आवाज नही होती सब्र करना होंगा!

बेवकुफ बन बैठे है आज हम मजहब के नाम पर! सियासतदां ऐश कर रहे है आज हमारी जान पर!

नेता अभीनेता गुरुर कर रहे है आज अपनी शान पर! मनमानी रोकनी पडेंगी हमे कोई नही ध्यान देगा हमारे हालात पर!

मन की मुराद पुरी करना मुुश्किल काम नही ! बुलन्द इरादे से समन्दर पार करना मुश्किल काम नही!

हौसले से जंग जीतना मुश्किल काम नही! मेहन्त मुश्कत साथ हो आलस्य का कोई मुकाम नही!

आज का काम कल पे न रहजाए! कोई किसी का मोहताज न होजाए!

जायज तमन्ना सब की पुरी होजाए!जिन्दगी कीसी की तमाशा न बनजाए!

दोजख जन्नत कीसे मीलेंगी पता नही!

जीयो ऐसे के सुकुन से जिन्दगी गुजर जाए!

चमक धमक से दुनिया को रीझाना आसां है! दिलेरी सखावती प्यार से अपना बनाना आसां है!

बेवकुफ भी अपने आपको बडा काबील समझते है! मोहब्बत से हर कीसी को समझाना आसां है!

जायजा दुनिया का होता है पलभर मे आज! इन्सान न आता फिर भी अपनी हरकतो से बाज!

खुद को ही न पता कीस बात का गुरुर है दिल मे आज!बेखबर है पडोसी से करता है खुद पे नाज!

सोच सोच कर पकने से बेहतर कुछ काम शुरु होजाए!

तमन्ना बोहत कुछ करने की हो पहला कदम तुरंत बडाया जाए!

मक्सद पुरा जरूर होंगा नीय्यत मे खलल्ल न किया जाए!

वक्त मुकर्र नही उतार चडाव का कदमो को जमीं पर ही रख्खा जाए!

इन्तजार मे दुआवोंका सहारा न होता दिल धडकना उसी वक्तबंद हो गया होता!

धोका देन औरे खाने की आदत न पडती मोबाईल हात मे गर आया न होता!

तारीफ लाख करो कुदरत की कम ही लगेंगी! कायेनात चलाती जो ताकतवही जाने वो कैसी लगेंगी!

छोटे छोटे जीवो से बनाये है सब जान्दार !बंद कर दी रोशनी गर सुरज की सोचो दुनिया कैसी लगेंगी!

बगैर सफाई नाकबुल है इबादत! इबादत करे दुर सब बुरी आदत!

असल मक्सद तन्दुरस्ती इन्सानियत! खुशरहो रब देगा हर जीज मे बरकत!

हक्क अदा करे सब का लब पे हो नाम रब का! खौफ रखे खुदा का हुक्म न माने शैतान का!

जुल्म करना सहेना गुनाह है यही फरमान खुदा का! मुस्लम ईमान इन्सानियत ही धर्म है मुस्लमान का!

पोहचाए तकलीफ जो हरकत पाप उसे कहेते है! दुर करे तकलिफ वो कर्म पुण्य जिसे कहते है!

छोटा सा गणीत है ये जिन्दगीजीने का! इन्सानियत जीसे सब कहते है!

सुकुने दिल अता करे ऐसी इबादत ही इबादत है! तसल्ली दिल को दे शिफा उसी दवा मे है!

चलती है दुनिया चलने दो.. कर्म खुद के नेक हो सब का भला उसी मे है!

नमुम्कीन है राजेदिल पता करना औरों का! ग़ैरों से क्या शिकवा करे वही हाल है अपनो का!

इस्तमाल होता है अकसर दिल के कोने कोने का! इल्झाम नही सारो पर राजों से भरा होता है दिल कीसी कीसी का !

गफल्त की निंद मे इमान की हीफाज़त न होंगी! दुनियादारी से गाफील रहकर इबादत न होंगी!

तमाशा बन जाए जिन्दगी तोराहत न होंगी! तरक्की की गुमान मे समझेहम कयामत न होंगी!

जंगे सिपाही के दिलो को जीतकर ही जंग जीती जाती है !

ग़म न करता उस प्यार के खातीर गर कुर्बान जां भी की जाती है!

प्यार नियामत है खुदा की सब से बडी ताकत है दुनिया की!

जन्नत हो जाए दुनिया बाटने से इसे फीर भी दिलो मे छुपाई जाती है!

न कीसी से मुकाबला हो न तमन्ना कीसी के आगे जाने की!

खुद की पहचान बनाने की जीद्द हो तोआत्मविश्वास ही मंजिल तक पोहचाता है!

खुद को तराशो इसकदर के कोई उनगली न उठे!

मीजाज हो ऐसा मीलने वालों का हात दुआ के लिए उठे!

छीन कर खानेवाले जानवर से बत्तर होते

मीलबांट कर खाये तो कोई न कीसे लुटे!

गर दिल मैला न रहे खुशयों का खजाना भरा रहे !

बुरी सोच करे खुद का बुरा इन्सान बुरा रहे न रहे !

रिज्जक मख्लुक की आती गैबसे चाहे आसमां जमी समन्दर मे रहे!

फिरभी लडाई रोज चलती खाने कमाने की दुनिया मे कही भी रहे !

अम्मा के प्यार पर कभी शक न होता !

अब्बु के साये मे भी सुकुन होता !

जोशे जवानी मे इन्सान इतना गाफील हेता! जीन्हो ने दिखाई दुनिया उन्ही से ही बेखबर होता!

पहचान खुदबखुद बन जाती है इन्सान की अपनी हरकतो से !

मरते दम तक नही छुटती आदते जो पड जाती है बचपन से!

खसलते वही के वही रहती है बुढा होता है इन्सान जिस्म से !

ऑख बंद होते ही सब रिश्ते टुट जाते याद किया जाता है कर्मो से।

वक्त सुहाना वैसा फिर न मिलेंगा जो कुछ दिनो मीला था !

न डर था न फिक्र जमाने की कायेनात का वो मेहफुज ठीकाना था!

तक्लीफ परेशानी की हद से गुजर करभी लाड मेरा वहॉ होताथा!जन्नत मे नही ये मज़ा तो मॉ की कोख मे मिलता था!

अहसास हुआ जब उसे मेरे आने का,

नजरया बदल गया दुनिया को देखने का !

हर लम्हा फिक्र थी मेरी बावजुद तक्लीफ परेशानी ,

वक्त था जां दावपे लगाने का !

मैहफुज इतना और बेफीक्र था सांस लेने से भी,

इन्तजार था उसे मेरे आने का !

दुनिया मे आने से पहले ही जन्नत का मज़ा मीलता है जहॉ, मॉ की कोख एकही पता है उस ठीकाने का!

हारना जीतना चलता रहे जीन्दगी के खेल मे उम्मीद न छुठेआखरी सांस तक !

मंजील तक पोहचना आसां होंगा उंची सोच मजबुत इरादा हो आखरी कदम तक !

दुनीया झुकती है झुकाने वाला चाहिए थक न जाना आखरी मौके तक !

इल्जाम लगा है दुनिया मे महान हस्तीयों पर भी सतकर्म ही पोहचायेंगा मंजील तक।

सबेरा हो हर रोज नई खुशनुमा सोच के साथ!

भुलाई जाए हर वो बात जो याद आय तक्लिफ के साथ!

कम होरहा है हमारा वक्त जीया जाए इस अहसास के साथ !

सूकूने दिल अता करेंगा रब रहो गर प्यार मुहब्बत के साथ !

रोशन करे दिलो को वो रोशनी दिलो मे हो !अरमान रहे सदा पर लालच दिल मे न हो !

घटती है हर पल उम्र ये अहसास हर पल हो !खौफेखुदा सदा दिलमे रहे नजाने दाना पानी कब बंद हो।

हमसफर हमराज न हो तो तरक्की मे रूकावट होंगी !कट जाऐंगा सफर पर रास्ते मे परेशानीयॉ होंगी !

अहसास गलतीयों का होंगा जब उम्र कम बची होंगी ! करलो तौबा अब देर न हो जाए वरना ऑखे बंद हुयी होंगी !

शारूख सलमान अमीर अक्शय चमक रहे दुनिया भर मे ऐसे कई सितारे !

करोडो खर्च करके चमक बडाने दिखाते ये चँनलोपर कई नझारे !

मस्ती मे जी रहे बनकर ऐसे बेखबर, मूफ्लीसी मे तडपकर जीरहे इनके कई साथी बेचारे !

खुशहाल रहना आसान होंगा इर्शा गर दिल मे न हो !जलन्दर क्या खाक जीएंगे आग जीसके तन मे लगी हो !

जमाना खराब है यह हर बुरे की सोच है अच्छाई खुद मे हो

दुनिया का सब से प्यारा हर कोना जीस का न्यारा है ! सोना उगले धरती हर मौसम जीसका प्यारा है !

जहॉ हिंदु मुस्लीम सिख ईसाई सब मे भाईचारा है !गुन है लाखो जीस मे वो प्यारा हिन्दुस्तां हमारा है !

वंदे मातरम वंदे मातरम

धर्मो से न बांटो इस को दुनिया की ये शान है ! हुए बोहत तुकडे इसके अब भी इसमे जान है !

मीली बडी मेंहगीआझादी इसपर लाखो जां कुर्बान है !सभ्यता इसकी भंग करे वो इन्सां नही हैवान है !

वंदे मातरम वंदे मातरम

आज दुनिया सारी तरक्की की दौड मे है !सब से बडी अब ताकत परमानु पेट्रोल है !

नजरे सारी दुनिया की आज हमारी ओर है ! सूपरपावर बनने हमे कमी मेल जोल की है ।

पीछे रहगये दुनिया से सदयों से चल रही लडाई देशमे जात पात की !

हिंन्दु मुस्लीम सब है शामील हरकत नही एक जमात की !

कभी लडते एकदुजे से कभी लडाई आपस की !

मुस्लीम बटे है फिरको मे हिन्दु की लडाई जात की !

खुद ही सम्भलाे नहोंगी लडाने की हिम्मत कीसी के बाप की !

रखो शान जयजवान जयकीसान नारे की !बंद करो सदयों की लडाई जात पात की !

हिंन्दु मुस्लीम सब है शामील हरकत नही एक जमात की !

कभी लडते एकदुजे से कभी लडाई आपस की !

मुस्लीम बटे है फिरको मे हिन्दु की लडाई जात की !

खुद ही सम्भलाे नहोंगी लडाने की हिम्मत कीसी के बाप की !

ऩाफरमानी कुदरत की सिर्फ इन्सान ही करता है !

अग्नी का इस्तमाल कर जीव जन्तु पर अत्याचार करता है !

जानवर ना चोरी करता न बलात्कार करता है !

लाखो बुराईयॉ भरी इन्सान मे फिर भी खुद को श्रेट कहलाता है !

अग्नी का इस्तमाल गर इन्सान न करता पर जीवो पर वोअत्याचार न करता !

हक्क मारने की फितरत न होती तो बछडो के हक्क का दुध न पीता !

अगनी के इस्तमाल के चक्कर मे निसर्ग पर वो अत्याचार करता !

अग्नी के बगैर इन्सान कुछ न कर सकता था !

न जाने अचानक वक्त कब कैसे मोड लेे ! अच्छा वक्त सामने हो बुरा कमर तोड ले !

हमदर्द गर साथ हो जो तक्लीफ बांट ले ! वही तेरा अपना है उसी से जीन्दगी बांट ले !

दौलत से शौहरत कमाई जा सकती है इज्जत नही ! कुछ ही दिनो की होती है वो हमेशा के लिए रुकती नही !

खुद्दारी दिलेरी इमान्दारी से मीली इज्जत दौलत कम होती नही ! बीकजाती हर जीज खुद्दारी दिलेरी इमान्दारी बाजारोंमे कभी दिखती नही !

मासूमीयत खुबसुरती ऐसी लाजवाब अता हुई उनको ! संगे मरमर मे जैसे तराशी हुई मुरत बनाई उनको !

नजाकत मे निखरते है और भी जलवे उनके ! सादगी मे कातीलाना अंदाज छुपे है उनके !

झुल्फो ने निखारा हुस्न जन्नत से आयी हुर जैसे ! मदहोश हुई जिन्दगी अश्फाकअब होश मे आये कैसे !

न मीटने वाली दुनिया मे शान मीली है हम को ! दादासाहेब फालके से पहेचान मीली है हमको !

सपनो की नगरी का शिल्पकार हमारा है ! भुलादे उनको ये किरदार नही हमारा है !

दुनिया का प्यारासा ये परिवार हमारा है ! न भुल सकेंगे उनको वो है (जनक)सरदार हमारा है !

अच्छे अच्छों को दिखाई बडे प्यार से उनकी जगाह उसने !

न पी सका शराब को कोई पी गयी क ईद रूस्तम तवंगर उसने।

बीता लम्हा कभी नही लौटता",सदउपयोग वक्त का इझाफा है धन दौलत प्यार का!

दुरउपयोग वक्त का निमंत्रन है परेशानियों का !

दुनिया मे है प्यारा हर कोना जीस का न्यारा !सोना उगले धरती हर मौसम जीसका प्यारा !

जहॉ हिंदु मुस्लीम सिख ईसाई सब मेभाईचारा ! गुन है लाखो जीस मे प्यारा हिमदुस्तां हमारा !

अधुरी हकीक्त के भरोसे किसी पर इल्जाम न कर !राहत मीलेंगी दर्द से तु चख्मो की ही दवा कर !

जायेका बदलने के लिए कीसे बदनामन कर !मजबुरी न हो तो बेमतलब गुन्हाे का अम्बार न कर !

गुदरत के खेल की इतल्हा न मीलती ! अगले पल की कोई खबर न मीलती !

प्यार से जीवो जीनेदो हर पल दोस्तो नसीब के लिखे की भनक न मीलती !

मेलजोल समझदारी से तक्लीफ परेशानी का पता नही चलेंगा !

मौका हात से निकल जाऐंगा समय का पता नही चलेंगा !

देखते रहजावोंगे कब आऐंगी शामत कीसे पता नही चलेंगा !

कुदरत की अनमोल नियामत तन्दुरसती मुफ्त मे पायी हमने !

अफसोस तक्लीफ मीलेंगी नाफरमानी से गर नसंभाल पायी हमने !

धनदौलत इज्जत शौहरत धरी रहजाऐंगी गर तन्दुरस्ती गवांयी हमने

कुदरत की नियामतो का लूत्फ उठाकर जीता जा। सूकून की जिंदगी गूजरेंगी हर रिश्ता दिल से निभाता जा।

चार दिन की चांदनी फिर अन्धेरी रात है।

हर ग़म मे तू खुशी के गीत गाता जा।

मुश्किलो के दौर मे बिल्कुल न डरा करो।

सब्र से काम लो अल्लाह को याद करो।

इम्तिहान का वक्त ये आसानी से कट जाऐंगा ।

इश्वरके सिवा किसी की मोहताजी न करो।

सब्र इन्सानियत बडाता है। इन्सानियत से सूकुन आता है। सूकुन जहान्नुम से दुर लेजाता है ।

दुनिया आखिरत मे वो जन्नत का मज़ा पाता है ।

ख्यालो की दुनिया मे खोना चाहिए ।सपनो को सजोये रखना चाहिए ।

बिना खर्च की ऐ मज़ा कभी कभी लेना चाहिए ।

बगैर मेहनत और इमानदारी उसे पूरी करने की कोशिश न करना चाहिए ।

बड़ी खूबसूरत है ये दुनिया प्यार भरी मेहफीले सजाता जा।

जो बोवोंगे वही पावोंगे हर दम खुशीयो के बीज पिरोता जा।

कूचपल की होती है मूश्किले सब्रसे शूक्र अदा करके जीता जा।

मूश्किल सेमीली कामयाबी का बड़ा मजा होता है हीम्मत से हर कदम बढ़ाता जा।

सबक़ जिन्दगी का अगर सही पढा जाए। मोहताजी मजबुरी कभी न नजदीक आए ।

दुनिया मे शानशौकत बडती जाए।

आखिरत मे भी वो जन्नत का मज़ा पाए।

शौरत दौलत के साथ जिन्दगी गुजारना अदना काम है । तंगी मुफलिसी मे दीन काटना हीम्मत वालो का काम है ।

हीम्मत वालो को दौलत का असर नही होता।

सिर्फ दौलत से दुनिया का हर काम नही होता

शिकवा शीकायत जीन्दगी से ना कर !

अल्लाह को याद करके शुक्र अदा कर !

नवाझता है वो सब को थोडा इंतजार कर ।

कुदरत ने ही बनाकर भेजा राजा जानवर का शेर को!

ता कयामत रहेंगा ये रुतबा ना मीलेंगा कभी ये बन्दर भेड को!

क्यु न दिया है ऐसा रुतबा कुदरत ने इन्सान को!

वाकिफ है वो इंसा की फितरत से गधे को बनाकर राजा दुर करता वो शेर को!

अंधेरो मे है दिल इबादतगाह रोशन है। चुल्हे नही जलते हफ्तों फाके मे गरीब है।

यहाँ मासुम और किसान रोज मर रहे है । इन पर इनायत कर खुदा तु रहीम करीम है ।

नाउम्मीद होते है वो जमीर जीन का मरजाता। लाश की तरह जीकर वो अपनो को परेशान करजाता।

लाईलाज मर्ज ये दुआओ का असर इसपर न होता। जमीर जिंन्दा हो जिस का दुनिया से वो आखिरत सवारके जाता।

खूबसूरती बढ़ती है दिल मे सफाई रखने से। तन्दूरस्ती अव्वल रहती है दिमाग मे फुतूर न रखने से।

जहान्नुम जिन्दगी हो जाती है नफरत को बढावा देने से। समझदारी से जीवो और जीने दो कुछ न बिगडता है खाने पीने से।

दवा बोहत है दुनिया मे ग़म को भूलाने की। भुल है ये तेरी पीकर ग़म मीटाने की।

औरो का दर्द मीटाने मे बडा सुकुन है । ज़माने का दस्तुर निराला है कीसे भी फुर्सत नही ये समझने समझाने की।

तमाशा न बनने दे जिन्दगी को अपनी। साधगी मे ही मीलती है चेहरे पे नूर दिल मे रोशनी।

एक चक्कर दूनिया का लगा सके उम्र मीलती है सब को उतनी ।कमाने खाने मे गूजारता है इन्सा पुरी जिन्दगी अपनी।

वक्त का खेल है यारो अमीरी गरीबी । हर एक का आता है जीवन मे वक्त्त गुलाबी ।

अच्छा बुरा हो या हो शराबी कबाबी। सजदा कर के मांगो देता है सब को हबीबी।

जवानी दीवानी मस्तानी होती है । बडी मुश्किल से आती झट से चले जाती है ।

मौज मस्ती तरक्की दोनो उसी वक्त्त पुकारती है । समझदारी से न हो काम तो जिन्दगी तबाह हो जाती है।

अरमान उँची उडान की है तो हौसले बूलन्द कर। मीलजाए कामयाबी तो घमंड न कर।

छोटी सी है जिन्दगी चल सब को जोड़ कर। न भुल जाना है यहा से सबकुछ छोडकर।

बदनाम न कर नाम शराब का। दिखाती है ये औकात इन्सान की पेट मे उतरने के बाद...

माना के हराम है ये पर कमबख़्त परदा फास करती है सब का गले से उतरने बाद ।

सुहाना सफर है जिन्दगी का सम्भल कर चला करो।

सुख-दुख मीलेंगे रास्ते मे कदम डगमगाया न करो। हीम्मते मर्दा मददे खुदा ये याद किया करो।

शानोशौकत के कीस्से दूनिया तक ही चलेंगे! धन दौलत के हीस्से भी सिर्फ यही मीलेंगे !

एक दाने के हजार दाने यहॉ मीलते है !

एक नेकी के कई हजार सवाब वहॉ मीेलेंगे!

सच्चे प्यार की परख नही हो सकती आसानी से।

पता चलेंगा गुजरोंगे जब तूम परेशानी से। दुर होंगे सब संगी साथी तब साथ निभाये जो इमानदारी से।

इतिहास नही पता है कीसे भी दुनिया की उत्पत्ती काहर कोई अंदाज लगाता है ।

पीर फकीर पैगम्बरो का बयान जूदा जूदा है । इबादत के तरीके अलग अलग थे पर सब की नजरो मे

कायेनात का खूदा एक है.।जात धर्म दुनिया मे अनेक है पर अल्लाह इश्वर गाॅड एक है।

न दूआओं का असर होता है न बद्दूआओं का । होता है असर इन्सान की अपनी गुनाहों का ।

इज्जत दौलत होती पर साथ न होता अपनो का। बुरा हश्र होता है इन्सानियत के दुश्मनो का।

अधर्मी चला रहे है धर्मो की दुकाने। ठगे जारहे दुनिया को सुनाकर झुठे अफसाने।

ऊफ न करता कोई गाते है उन्ही के तराने। तहजीब न रही तैयार है सब एकदुजे को काठटने कटाने।

मोहब्बत अज़ीम नियामत है कुदरत की ! अमन खुशी की चाबी है ये दुनिया की !

बांटने से बडती है ये छुपाऐ रखने की इसे फीत्रत है इन्सां की !

खौफे खूदा हो दिल मे तो मंजिल दुर नही ।हासील करना सुखशांती कोई मुश्किल नही।

हर ज़ररा है मोहताज उसका । दरबार मे उसके देर है अन्धेर नही।

होंगी हर मुराद पुरी मेहनत लगन जरुरत है। चापलुसी से कुछ नही होता

इमानदारी की जरूरत है । आलस्य मुश्किले बडा ता है ताजगी की जरुरत है ।

सब कुच मीलेंगा आराम से सज्दा खुदा को करने की जरुरत है ।

प्यार से ही प्यार मीलता है। बाटने से ये बेशुमार मीलता है।

एक ही नियामत है ये दुनिया की एक बार दो तो हजार बार मीलता है ।

दिलो मे है अंधेरा मन्दिर मस्जिद मे उजाले से क्या होगा ।

येतबार न रहा हमसफर पर साथ-साथ चलने से क्या होगा ।

छोटी होगयी दुनिया नजाने आगे अब और क्या होगा ।

आँख खुलेंगी जब इंसान कीदुनिया मे सब का भला होगा ।

जहालत लानत है दुशवार करती है जीना इन्सान का ! जाहीलों पर कब्जा आसानी से होता है शैतान का!

जिहाद के नाम पर हराम काम कराती है जहालत! इबादत से दुर रखकर जहान्नुम पोहचाती है जहालत!

मोहब्बत गैरो से करना मुश्किल है आसान नही। अपनो से करना आम है कोई मुश्किल काम नही ।

इन्सानियत निभाती है गर मोहब्बत, इस से बढकर कोई पैगाम नही ।

मतलबी मोहब्बत करने वाले से बडा कोई बदकार बदगुमान नही

कसमो से बान्धे रिश्ते भी विस्वास की कमी से तूटते है। प्यार कहाॅ बचा है मतलब के पिछे सब भागते है ।

मतलब निकल जाने पर हकदार को भी दांटते है । अरमान अधुरे रहजाए तो इन्सान भी कुत्ते की तरहा काटते है

मैकदे मे साखी न मीले मुमकीन नही । काबील हमसफर हो मंजिल न मिले मुमकिन नही।

जिन्दगी चैन से जीना आसान है कोई मुश्किल नही। अपने औकात से कम सोचे वो बुझदील है इन्सान नही।

छोटी छोटी बातो पे रोना बेकार है ! मेहंगाई से गरीब का जीना दुषवार है !

हीम्मत से ही बडता सब कारोबार है ! इमान्दारी से कुछ न मीलेंगा जहॉ चोरो की सरकार है !

करोडो साल पहले हायटेक कायेनात बनाकर दी कुदरत ने इंन्सान को!

बिना ऑपरेटर चलती है दुनिया एक भी खम्बा नही दिया आसमान को!

छोटी सी तरक्की पर आज घमंड होता है इन्सान को! भुलगया वो खाक करदेंगा कुदरत पल भर दुनिया को!

संभलकर चलना मोहल्ले की गलीयाॅ बोहत तंग है। मौका न मीलेगा पलटने का पीटपर खंजर घोपने अपने ही छुपे है ।

अपने मेरे बोहत है ,फिरभी दिल कहता है दोस्तो पर भरोसा करले।

नशे मे रहता हुँ अकसर ,नींद पर भी भरोसा न रहा ,न जाने कब मौत से समझौता करले।

नफरत न कर इन्सां इन्सान से। मौका है करले तौबा गुनाहों से ।

न लेजाएंगा कोई कुछ दुनिया से । पाऐंगा जन्नत का मज़ा नेकीयो से।

ज्जबात की कद्र न रही नाकामी का मनसुबा कामयाब होगया। सलामी जहाँ तोपो से मीलती थी वह मैदान वीरान होगया ।

हर तमन्ना पूरी होगी इन्तजार थोडा करना होगा । प्यार से जीकर लगन से मेहनत करना होगा ।

बीन रोये माँ भी दुध नही पीलाती खुदा के सामने झुकना होंगा।

सब्र ही अता करे सुकूने दिल हर हाल मे !जीयो चाहे तवंगरी या मुफलीसी के जाल मे !

न हो शिक्वा जमाने से बचाकरो नाफरमानो से !मेहरुमे सुकुन होकर घिरे रहोंगे शैतानों से !

खुश रहो हर हाल मे मायुसी हराम करदेती है जीना !

वक्त पीलाए कडवा घुंठ तो सजा समझकर पी लेना !

गल्ती खामीयों को ऱखो याद न उन्हे दोहराना !

माहोल बदल जाता ह वक्त के साथ तो क्युँ घबराना !

गुरबत से परहेज हमेशा होता रहा !कमब्खत वक्त उसे करीब लाता रहा !

लाइलाज मर्ज तो नही है ये गुरबत ! हरकतो की बरकत से दुर जाने से रहा !

कभी कभी यारों ऐसा भी कीया जाऐ ! दुख दर्दऔरों का भी मेहसुस किया जाए !

अपनो की फिक्र तो सब को लगी रहती है ! गैरो पर थोडा तो करम किया जाए !

होसले बुलंद इरादे नेक हो तो हर मुश्कील आसां होती !

रोको न सफर मन्जील विश्वास और दुआवो से हासील होती !

दुखदर्द कोई न किसी का बांट सकता ! मर्ज की तक्लीफ मरीज ही जान सकता !

प्यार करनेवाला अहसास जरूर करसकता ! इस हाल मे इन्सान हमदर्दो को परख जरुर सकता !

चमक धमक है दुनिया मे कहीं, कहीं अन्धेरा छाया हुआ है !

अय्याशीयाँ हो रही है कही, कही भुकमरी गरीबी ने कोहराम मचाया है !

हक्क मारकर गरीबो का कुछ ही दिनो की मस्ती हो सकती है !

पल भी नही मीलता सारी दौलत देकर खाली हात जाना पडता है !

हर हाल मे खुश रहे गर है इमान सलामत ! हो खुद पे काबु रहे तनदुरस्ती सलामत !

सच्चाई के सामने झुट की आती है शामत !रब से मोहब्बत हो तो दुर होती हर आफत !

हक्कदार के हक्क आदायगी से इज्जत बडजाती ! रहम हो मुफ्लीसों पर तो दौलत बड जाती !

एक कतरा भी नही निगल सकते रब की मर्जी के बगैर ! कल की फिक्र मे फिर भी इन्सान की निंदे उठ जाती !

मक्सद न हो जीने का तो वीरान है जिंन्दगी ! मंजील पोहचने की जिद्द न हो बेकार है जिन्दगी!

वक्त कम देती है अरमां पुरे करने को जिन्दगी! समझदारी सुकुन हीम्मत से ही संवरती है जिन्दगी !

वक्त अच्छा हो या बुरा रूकता नही!कम होता है ग़म खुशयो से मिठता नही!

रूत्बा बडता है झूकने से कोई छोटा होता नही! सब्र से बडकर दुनया मे कोई दवा नही!

कुदरत के इशारे चलती दुनिया और न कोई सरोकार है !रिज्जक मखलुक तक पोहचाना उसका कारोबार है !

मांगेा नमांगो देता हर एक को हरबार है !मानो न मानो पर दोनो जहॉ मे उसी की सरकार है !

मासूमीयत झलके ऑखों मे कपट गर दिलमे न हो !इन्सानियत अपनेआप नजर आती फुतुर गर दिलमे न हो !

संभलना पडेंगा हर कदम कदम पर गर निय्यत मे खलल हो ! खौफेखुदा दिल मे हो तो हर मुश्किल आसान हो !

ऐ खूदा दोस्ती मे ऐसी ग़ैबी ताकत भरदे !दिल से निकले दुआ और तु कबुल करदे !

कम्जर्द दोस्तोमे दोस्ती का अहसास भरदे !हर खता उनकी दोस्ती के सधके माफ करदे !

बादशाही पर लानत है गर लोगों के दिलोंपर राज न करें !

रोझी हर एक की आती है गैब से मक्कार है वो लोगो मे तक्सीम न करें !

हद से ज्यादा न कोई खा पी सकता न रुतबा कुदरत के बराबर पा सकता !

जिन्दगी इन्सान की इन्सान से लगी रेस है कुदरत केआगे कोई जा नही सकता !

अजीब मोडपर लेजाकर खडा करदेंगा वक्त का कोई भरोसा नही !

दिया हुआ प्यार उस वक्त काम आयेंगा और किसी का येतबार नही !

हमदर्दी से किया प्यार कही न कही काम आयेंगा !दिखावे के प्यार से दिखावा ही सामने आयेंगा!

आती जाती रहेगी बहारे और तुफान ये ऐसा संसार है ! प्यार करना मुश्किल नफरत करना यहाँ आसां है !

मीठास लाती है मोहब्बत जिंदगीमे फिर भी कन्जुसी की जाती है !

हमदर्दी प्यार न हो तो दोस्ती रिश्तेदारी सब धरी रह जाती है !

सात जन्म साथ रहे इस तमन्ना से सती जाती थी सत्ययूग की नारी!

साथ फेरों के चक्कर मे आज परेशान है कल्यूग की नारी!

मेहंगाई की बडी बीमारी से हतबल हो गयी है आज की नारी!

टेन्शन ज्यादा खाना कम खुद से ज्यादा बच्चो का ग़म इस मे खत्म होरही है बेचारी!

सब का तु होने से सब तेरे नही होगें ! वक्त ही गीनायेंगा कितने तेरे कीतने पराये होंगे !

पर तुअपना बनाना न छोड कुछ प्यार तो कुछ तजरुबा देंगे !

अजीब सी उल्झनो मे आज है इन्सान !

मौज मस्ती करके भी रहता है परेशान !

हावी हो गया है आज उस पे हर तरहा से शैतान !हो जाऐंगी दिलो की सफाई गर बस जाए

दिलो मे अल्लाह इश्वर भगवान !

दिल न दुखाये कीसी का कोई ऐसी तौफीक सब को अता हो या रब !

सुकुन से गुजरा हो हर मखलुक का माहोल ऐसा बनादे या रब !

कई तरीके है ईबादत के पर इन्सान याद करता तुझी को या रब !

नफसा नफसी का आलम मीठा कर तेरा रहमोकरम हो सबपर या रब !

चमन के फुलो मे बहार मुरझाने तक ही होती है !

तरक्की के गुमान मे मगरुर न होना गुरुर मे अक्सर ऑखे बंद होती है !

योग और साधना एक साथ करने की संस्करुती है हिन्दुस्तान की!

नमाज मे ही दिखती है ये संस्करुती हिन्दुस्तान की!

बुरा न मानो दोस्तो हिन्दु तो हर हिन्दुस्तानी है पर गौर करो,

पांच वक्त जमींपर सजदा करने वाला शान है हिन्दुस्तान की!

मुक्ममल मुकान पाकर बीते दिनो को नजरअंदाज न कर !

कूदरत नवाझेगा और भी खुदाई दावा न कर !जन्नत है मॉ के कदमो मे कभी उसे रुसवा न कर !

दुनिया मे भलाई का बदला आखिर भला ही होगा !लाख मुलामा दो बुराई पे परअंजाम बूरा ही होंगा !

सिकंदर ने जीतकर दुनिया सब को ये सिखाया है !खाली हात आना और खाली ही जाना है !

ईश्वरअल्लाह है निगेहबान क्यु होता है तु परेशान ! बनाया है हर जान्दार उस ने कतरे मे दालकर जान !

तन्दुरस्ती सब से बडी नियामत है दुनिया की!मीलेंगे और भी मौके डगमगाने न दे तु अपना इमान !

रेश्मी झुल्फो के साये मे शाम होजाए !

आरजु का मेरे किस्सा सरेआम होजाए !

उनकी बाहों मे ताकयामत गुजरे हर शाम मेरी नजरो से ही किस्सा तमाम हो जाए !

झुकी हुई नजरो मे उनके गजब की तासीर !उठी गर मैहफील मे तो कत्लेआम हो जाए !

ऐ खुदा ये तमन्ना गैब से पुरी हो जाए ! आँखों मे उनकी मेरा अक्स नजर आ जाए !

तेरी झुल्फो के साये मे शाम होजाए ! आरजु का किस्सा मेरे आम होजाए !

बाहों मे गुजरे तुम्हारी मेरी हर शाम नजरो से ही किस्सा तमाम हो जाए !

झुकी हुई नजरो मे गजब की तासीर उनके !उठी गर मैहफील मे तो कत्लेआम हो जाए !

कद्र न होती यहॉ जज्बातो की ऑख मुंजकर भरोसा न किया जाए !

बेवकुफ समझते है कमजर्फ गर बेमतलब उन्हे प्यार किया जाए !

जमाना खराब नही नीय्यत खराब होती है इन्सान की !सोच समझकर हर कदम बढाया जाए !

दुनिया की मोहब्बत मे चुर खुद से नाइन्साफी न हों !दुनियादारी की फिक्र मे खुदा की नाफरमानी न हो !

अच्छा ही सिखाता है हर मजहब दोस्तो !मजहब के नाम से तबाही नही होंगी गर इन्सान मे बुराई न हो !

इन्तजार का उनके अलग लुत्फ था उस जमाने मे !कभी रुकते थे छतपे कभी मोहल्ले की गलीयों मे !

बाग बाग होता था दिल एक छलक से उनके ! तोहफा लाजवाब लगताता मुस्कुराहट का उनके !

अजब कश्मकश मे गुजरती थी राते ख्वाबो मे उनके!तमन्ना यही रहती थी हसीन चेहरे को सबेरे देखु उनके !

जवानी की धहलीज पर पहला कदम था उनका !हर कदम कदम पे पहरे लगे हुए थे उनके !

कमसीन मोहब्बत का इजहार न हुआ (आशफाक)मुझसे ! लेगया जालीम सामने मेरे दुल्हन बनाके उनको !

खुन से बने रिश्तों मे अहसास की कमी होसकती !

मुक्दस मुकाम है दोस्ती का जहां कोई कमी नही होती

हर रिश्ते मे मतलब छुपा होता है !

जो बगैर मतलब निभ जाती दोस्ती वही होती !

(आशफाक खोपेकर)

कल चला गया आज जारहा है ! अच्छे बूरे हर वक्त को जाना है !

दुनिया मोहमाया का खजाना है ! भुलादो नफऱत हमे प्यार निभाना है !

मन्नत मुरादो से अब भऱते नहीं‎ खजाने !

पेट भऱ न मीलता कमाते मर्दऔऱ ज़नाने !

पीने मीलता मुश्किल से पानी नहाकर गुजरे जमाने !

रुखीसुखी खाकर जीते गये दाल खाने के दिन सुहाने !

लुटकर दो सौ साल छोड गये फिरंगी डाँलर के बराबर रुपये‎ को !

साठ साल मे अपनो ने बनाया साठ ऱुपये का डाँलर को !

बसे है दुश्मन देश मे न जीने देरहे किसानो मजदुरों को !

क्या करेंगा एक मसीहा मुश्किल है काबु करना शैतानो को !

एक तरफा प्य़ार जुल्म का सबब न बनजाए !

सामने वाले के अहसास की भी कद्र होजाए !

नफऱत मीठाने का औजार है प्यार ,

इसी से जुल्म न किया जाए !

हेाली मुबारक सबको रंगोसे कीसी की जिन्दगी खऱाब न हो जाए !

गुस्सेवाले को दुश्मनो की जरुरत नही !

इल्मवाले को जायदाद की जरुरत नही !

दयावान को हीफाजत की जरुरत नही !

अच्छे इऩ्सान को ताऱुफ की जरुरत नही !

चमक धमक दुनिया की दूनिया मे ही रहजानी है !

अच्छाईय़ा ही दुनिया मे एक दिन काम आऩी है !

दुनिया तो ये फानी है दो ही दिन की जिन्दगानी है !

याद रख ऱब को तु बंदे बेकार मनमानी है !